



भारत का राजपत्र The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 16] नई दिल्ली, शनिवार, अप्रैल 22, 1989 (वैशाख 2, 1911)
No. 16] NEW DELHI, SATURDAY, APRIL 22, 1989 (VAISHAKHA 2, 1911)

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके ।
(Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate Compilation)

भाग III—खण्ड 4

[PART III--SECTION 4]

सांविधिक निकायो द्वारा जारी की गई विविध अधिसूचनाएं जिसमें कि आदेश, विज्ञापन और सूचनाएं सम्मिलित हैं

[Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies]

भारतीय रिज़र्व बैंक

सरकारी और बैंक लेखा विभाग

केन्द्रीय कार्यालय

बंबई, दिनांक 26 दिसंबर 1988

भारतीय रिज़र्व बैंक, सामान्य विनियमावली,
1949 का संशोधन-विनियम 22-बैंक के
लाभ व हानि लेखा के फॉर्मेट में परिवर्तन

भारतीय रिज़र्व बैंक अधिनियम, 1934 की धारा 58 की
उप-धारा 2 (एम) के अनुसरण में भारतीय रिज़र्व बैंक
का केन्द्रीय बोर्ड केन्द्रीय सरकार की पूर्व-स्वीकृति सहित

इसके द्वारा निदेश देता है कि भारतीय रिज़र्व बैंक सामान्य
विनियमावली, 1949 का विनियम 22 के उप-विनियम
(ii) तथा (iii) में निम्न संशोधन इस तरह किया
किया जाए :-

(i) विनियम 22 के उप-विनियम (ii) में "व्यय"
शीर्ष के तहत वर्तमान में निम्नानुसार प्रतिस्थापित किए
जाएं :-

व्यय

"व्याज"

स्थापना

निर्देशकों तथा स्थानीय बोर्ड के सदस्यों के शुल्क व खर्च
कोष का प्रेषण

अधिकरण प्रभार
प्रतिभूति मुद्रण (चेक, नोट फार्म आदि)
मुद्रण व लेखन सामग्री
डाक-व्यय तथा दूर-संचार प्रभार
किराया, कर, बीमा, प्रकाश व्यवस्था आदि
लेखा परीक्षकों के शुल्क व खर्च
विधि प्रभार
बैंक सम्पत्ति की मरम्मत एवं मूल्यहास
फुटकर खर्च

जोड़

उपलब्ध शेष राशि
घटाएं:—निम्नलिखित को अंशदान
रा० श्री० ऋ० (दीकाप्र) निधि
स० ग्रा० ऋ० (दीकाप्र) निधि
रा० ग्रा० ऋ० (स्थिरीकरण) निधि
अन्य (मुख्य मदें स्पष्ट करें)
केन्द्रीय सरकार को देय अधिशेष

(II) विनियम 22 उप-विनियम (iii) काटा जाए

(III) संशोधन 20 मई 1988 से प्रभावी होंगे।

आर० जानकीरामन
कार्यपालक निदेशक

स्टेट बैंक आफ इंदौर

प्रधान कार्यालय:

इंदौर, दिनांक 29 मार्च 1989

एतद्वारा यह सूचित किया जाता है कि स्टेट बैंक
आफ इंदौर के शेयरधारियों का रजिस्टर शेयर अंतरण
के लिए सोमवार दिनांक 22 मई, 1989 से सोमवार
दिनांक 19 जून, 1989 तक (दोनों दिन शामिल)
बंद रहेगा।

निदेशक मंडल के आदेश से
एम० के० सिन्हा
प्रबंध निदेशक

भारतीय चार्टर्ड प्राप्त लेखाकार संस्थान

नई दिल्ली-110002., दिनांक 30 मार्च 1989

(चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट्स)

सं० 3-एन० सी० ए० (8) 8/88-89 :—चार्टर्ड प्राप्त
लेखाकार विनियम 1988 के विनियम 10 (1) खंड
(तीन) के अनुसरण में एतद् द्वारा यह सूचित किया जाता
है कि निम्नलिखित सदस्यों को जारी किए प्रेक्टिस
प्रमाणपत्र उनके आगे दी गई तिथियों से रद्द कर दिए

गए हैं क्योंकि वे अपने प्रेक्टिस प्रमाण पत्र को रखने के इच्छुक
नहीं हैं।

क्र० संख्या	सदस्यता संख्या	नाम एवं पता	दिनांक
1.	84873	श्री प्रेम प्रकाश गाँधी, ए० सी० ए०, चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट, डी०-157, प्रशांत विहार, नई दिल्ली-110042।	1-8-87
2.	85283	मिस गीता सभरवाल, ए० सी० ए०, डी०-10/1, कृष्ण नगर, दिल्ली-110051	12-5-88
3.	85833	श्री शिव कुमार, ए० सी० ए०, केयर ओफ श्री ईश्वर दत्त शर्मा, व्हील स्ट्रीट, गांधी चौक, बहादुरगढ़, डिस्ट० रोहतक, हरियाणा।	10-3-88
4.	86511	श्री राजीव चट्टा, ए० सी० ए०, एकाउन्ट्स ऑफिसर, एच० एम० टी० लिमिटेड, मशीन टूल डिजिटल, पिंजोर-134101।	19-5-88

सं० 3-एन० सी० ए० (8)/9/88-89—चार्टर्ड प्राप्त
लेखाकार विनियम 1988 के विनियम 10(1) खण्ड (तीन)
के अनुसरण में एतद् द्वारा यह सूचित किया जाता है कि निम्न-
लिखित सदस्यों को जारी किए प्रेक्टिस प्रमाणपत्र उनके
आगे दी गई तिथियों से रद्द कर दिए गए हैं क्योंकि वे अपने
प्रेक्टिस प्रमाणपत्र के रखने के इच्छुक नहीं हैं।

क्र० संख्या	सदस्यता संख्या	नाम एवं पता	दिनांक
1.	1894	श्री कामेश्वर नाथ माथुर, ए० सी० ए०, सी०-27, प्रीत विहार, दिल्ली-110092।	1-4-88
2.	80028	श्री सुधीर कुमार कपूर, एफ० सी० ए०, 16/8, ओल्ड राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-110060।	1-8-87
3.	80891	श्री अनिल कुमार जैन, एफ० सी० ए०, एच० नं० 5791, बस्ती हरफूल मिह, सदर धाना रोड़, दिल्ली-110006।	1-4-88

1	2	3	4	उनके आगे दी गई तिथियों से रद्द कर दिए गए हैं क्योंकि वे अपने प्रैक्टिस प्रमाण पत्र को रखने के इच्छुक नहीं हैं—
क्रम सं०	सदस्यता सं०	नाम एवं पता	दिनांक	
1	2	3	4	
4.	81025	श्री पी० जे० एल० सांधी, एफ० सी० ए० 1-4-88 1060, रेमब्रांडट, बोसार्ड, क्यू जे० 4एक्स०आई०वाई० 6, कनाडा :		
5.	84061	श्री राकेश कुमार सेठी, ए०सी०ए०, ई०-29/बी०, विजय नगर, दिल्ली-110009।	1-4-88	
6.	84791	श्री राजेश कुमार, ए०सी०ए० एच० नं० 4-82, माडल कोलोनी, यमुना नगर-135001।	5-9-88	
7.	84965	श्री सुरेश कुमार, ए० सी० ए०, के-4/563, पश्चिम बिहार, नई दिल्ली-110063।	1-4-88	
8.	87355	श्री कृष्ण कुमार बेक्टर, ए० सी० ए०, चार्टर्ड एकाउंटेंट, दीपक हॉस्पिटल, सराभा नगर, लुधियाना।	5-10-88	
नं० 3-एन० सी० ए०(8)/10/89/88-89:—रैगुलेशन 10 (1) की धारा (4) की जिसे चार्टर्ड एकाउंटेंट्स के रेगुलेशन 1988 के अधिनियम 10 (2) (बी) के साथ पड़ा जाए, के अनुसार एतद्वारा सूचना दी जाती है कि निम्नलिखित समय का कार्य करने का प्रमाण पत्र उसके आगे दी गई तिथि से रद्द किया समझा जाएगा क्योंकि उसने कार्य प्रमाण पत्र हेतु वार्षिक शुल्क का भुगतान नहीं किया था।				
क्रम सं०	सदस्यता सं०	नाम एवं पता	दिनांक	
1.	85268	श्री पवन भल्ला, ए० सी० ए० ; 36, चन्द्र लोक एन्क्लेव, पितम पुरा, दिल्ली-110034	1-8-87	
2.	85268	श्री पवन भल्ला, ए० सी० ए०, मैसर्स वी० गुप्ता एंड एसोसिएट्स 30-31, गोविन्द कालोनी मार्किट राजपुरा-140401	1-8-87	
3.	85268	श्री पवन भल्ला, ए० सी० ए०, मैसर्स वी० गुप्ता एंड एसोसिएट्स 30-31, गोविन्द कालोनी मार्किट राजपुरा-140401	1-8-87	
4.	85268	श्री पवन भल्ला, ए० सी० ए०, मैसर्स वी० गुप्ता एंड एसोसिएट्स 30-31, गोविन्द कालोनी मार्किट राजपुरा-140401	1-8-87	
5.	82213	श्री राजू मल्होत्रा, ए० सी० ए०, मैसर्स वी० गुप्ता एंड एसोसिएट्स 30-31, गोविन्द कालोनी मार्किट राजपुरा-140401	26-8-88	
6.	82296	श्री विनोद चन्वर ओझा, ए० सी० ए०, ए-10, डिफेंस कालोनी, नई दिल्ली।	1-4-88	
7.	82734	श्री अशोक कुमार सोनी, ए० सी० ए०, 28/13, शक्ति नगर, दिल्ली-110007	24-8-88	

सं० 3-एन० सी० ए०(8)/11/88-89:—चार्टर्ड प्राक्टिसिंग लेखाकार विनियम 1988 के विनियम 10 (1) के खण्ड (तीन) के अनुसरण में एतद्वारा यह सूचित किया जाता है कि निम्नलिखित सदस्यों को जारी किए प्रैक्टिस प्रमाण पत्र

1	2	3	4
8.	83277	श्री योगिन्द्रा सिंह ठाकुर, ए० सी० ए०, एच० पी० स्टेट इलेक्ट्रॉनिक डेवलपमेंट कारपोरेशन लि०; सलीश राम भवन, खिलिमी, शिमला ।	16-8-86
9.	83806	श्री रमन कुमार टंडन, ए० सी० ए० , कोडी/32, सी अशोक विहार, फेज-1, बिल्ली-110052 ।	1-10-88
10.	83811	श्री प्रदीप कुमार गोयल, ए० सी० ए०; मैसर्स इलाही गोयल एंड कं० चार्टर्ड एकाउंटेंट्स, 835, आघिड बिल्डिंग, बल्लीमारान; बिल्ली-110006	1-9-88
11.	83978	श्री अश्वनी जुनेजा, ए० सी० ए०, 136, एम० आई० जी० फ्लैट्स प्रसाद नगर, नई दिल्ली-110006	21-9-88
12.	84135	श्री सुरेश कुमार, ए० सी० ए०, ए-1/150 सफवरजंग एन्कलेव, नई दिल्ली-29	16-9-88
13.	84736	श्री सुनील कुमार पुरी, ए० सी० ए०, पोकेट बी-55, फेज-2, अशोक विहार, दिल्ली-52	1-4-88
14.	84754	श्री आर० श्रीनिवासन, ए० सी० ए० 120, सत्या निकेतन, नई दिल्ली-21	15-11-88
15.	85559	कुमारी मनविष्णु कौर मामक, ए० सी० ए०; बी-434, न्यू फेन्ड्स कालोनी, नई दिल्ली-110065	1-9-88
16.	85940	श्री परम ताज मित्तल, ए० सी० ए०; 15/60, पंजाबी बाग, नई दिल्ली-26	1-4-88

1	2	3	4
17	86051	श्री प्रमोद कुमार, ए० सी० ए०, केयर आफ एफ एंड ए बिन, एन० एच० पी० सी० टनकपुर एच० ई० प्राजीत, पी० ओ० बनवासा, डिस्ट, नैनीताल पिन-262310	1-4-88
18.	86384	श्री रविन्दर पाल शर्मा, ए० सी० ए०, 48, ई० एस० आई० कालोनी, नई दिल्ली-15	27-10-88
19.	86792	श्री राकेश जोशी, ए० सी० ए०, 116, माडल टाऊन अम्बाला सिटी (हरियाणा)	1-7-88

सं० 3-एन० सी० ए० (8)/12/88-89--चार्टर्ड प्राप्ति लेखाकार विनियम 1988 के विनियम 10 (1) खण्ड (तीन) के अनुसरण में एतद्वारा यह सूचित किया जाता है कि निम्नलिखित सदस्यों को जारी किए प्रैक्टिस प्रमाण पत्र उनके आगे दी गई तिथियों से रद्द कर दिए गए हैं क्योंकि वे अपने प्रैक्टिस प्रमाण पत्र को रखने के इच्छुक नहीं हैं।

क्रम सं०	सदस्यता सं०	नाम एवं पता	दिनांक
1	2	3	4
1.	3974	श्री सुरेश चन्वर सूव, ए० सी० ए०, सिटी बैंक, एन० ए०, जीवन भारती बिल्डिंग, कनाट सर्कस, नई दिल्ली ।	1-8-86
2.	50719	श्री आस्पी डी० मेहता, ए० सी० ए०, 8ए, आत्मा राम हाऊस, 1, टोस्टेय मार्ग, नई दिल्ली ।	1-8-86
3.	81142	श्री तरुन कुमार सक्सेना, ए० सी० ए०, मैसर्स तरुन शंकर एंड एसोसिएट्स ई-186, नारायण विहार, नई दिल्ली-28 ।	1-4-86

1	2	3	4
4.	82645	श्री वी० थिरुमलाई, ए० सी० ए०, मेसर्स ग्रनेस्ट एन्ड विहनी, पी० ओ० बाक्स 140, मनामा, बहरीन।	1-4-87
5.	85044	श्री नलिन खोसला, ए० सी० ए०, 18, बजार लेन, बंगाली मार्किट, नई दिल्ली-110001।	1-4-87
6.	85798	श्री संजय छाबरा, ए० सी० ए०, नं० 5/ई, ब्लाक, लोकल शापिंग सेन्टर, मस्जिद मोठ, नई दिल्ली-110048।	10-8-88

सं० 3-एन० सी० ए० (8)/13/88-89--चार्टर्ड प्राप्त लेखाकार विनियम 1988 के विनियम 10 (1) खण्ड (तीन) के अनुसरण में एतद्वारा यह सूचित किया जाता है कि निम्नलिखित सदस्यों को जारी किए प्रैक्टिस प्रमाण पत्र उनके आगे दी गई तिथियों से रद्द कर दिए गए हैं क्योंकि वे अपने प्रैक्टिस प्रमाण पत्र को रखने के इच्छुक नहीं हैं -

क्रम सं०	सदस्यता सं०	नाम एवं पता	दिनांक
1.	3176	श्री अर्जन देव मलिक, ए० सी० ए०, ए-22, एन० डी० एस० ई०, पार्ट-2, नई दिल्ली-49।	30-11-88
2.	71978	श्री नगेन्द्रा पारख, ए० सी० ए०, डिप्टी मैनेजर फाइनेंस, पावर फाइनेंस कारपोरेशन, चन्दरलोक, 36 जनपथ, नई दिल्ली।	1-10-88
3.	85519	श्री सुधीर गुप्ता, ए० सी० ए०, केयर आफ डा० बलदेव कृपन 1450, वासो डा०, फ्रेमोन्ट सी० ए०, 94539, यू० एस० ए०।	25-11-88

एम० सी० नरसिम्हन,
सचिव

बम्बई-400005, दिनांक 24 मार्च 1989

सं० 3 डब्ल्यू० सी० ए० (4) 15/88-89--चार्टर्ड प्राप्त लेखाकार विनियम 1988 के विनियम 18 के अनुसरण में एतद्वारा यह सूचित किया जाता है कि चार्टर्ड प्राप्त लेखाकार अधिनियम 1949 की धारा 20 उपधारा 1 (अ) द्वारा प्रदत्त अधिकारों का प्रयोग करते हुए भारतीय चार्टर्ड प्राप्त लेखाकार संस्थान परिषद ने अपने सदस्यता रजिस्टर में से मृत्यु हो जाने के कारण निम्नलिखित सदस्यों का नाम उनके आगे दी गई तिथि से हटा दिया है।

क्रम सं०	सदस्यता सं०	नाम एवं पता	दिनांक
1.	675	श्री विट्ठल वी० कीर्तने, एफ० सी० ए०, 3, "पराग", मधुपार्क, खार, बम्बई-400052।	2-7-88
2.	3288	श्री डी० आर० जे० देसाई, एफ० सी० ए०, देसाई एण्ड कम्पनी, 38, पॉलीस कोर्ट लेन, साधना रेयान हाउस के पीछे, बम्बई-400001	24-1-88

सं० 3 डब्ल्यू० सी० ए० (4)/14/88-89--चार्टर्ड प्राप्त लेखाकार विनियम 1988 के विनियम 18 के अनुसरण में एतद्वारा यह सूचित किया जाता है कि चार्टर्ड प्राप्त लेखाकार अधिनियम 1949 की धारा 20 उपधारा 1 (अ) द्वारा प्रदत्त अधिकारों का प्रयोग करते हुए चार्टर्ड प्राप्त लेखाकार संस्थान परिषद ने अपने सदस्यता रजिस्टर में से मृत्यु हो जाने के कारण निम्नलिखित सदस्यों का नाम उनके आगे दी गई तिथि से हटा दिया है।

क्रम सं०	सदस्यता सं०	नाम एवं पता	दिनांक
1.	4093	श्री शिरीष एच० शाह, ए० सी० ए०, आशिष, निम्नर पालडी बस स्टैंड, सरखेज रोड, एलीसब्रीज, अहमदाबाद-380007।	20-10-88
2.	5480	श्री रनजीत एस० पटेल, एफ० सी० ए०, 47, हिन्दी कालोनी नवरंगपुरा, अहमदाबाद-380009।	20-10-88

क्रम सं०	सदस्यता सं०	नाम एवं पता	दिनांक	1	2	3	4
3.	15952	श्री शैलेश जी० कपाडिया, एफ० सी० ए०, मैसर्स कपाडिया एसोसिएट चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट्स, 1001, राहेजा चेंबर्स, 213 नरीमन प्वाइंट, बम्बई-400021।	20-10-88	2.	6089	श्री डी० डी० रोजाध्यक्ष, मैसर्स एम० जे० भिडे एंड कं०, चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट्स, 3, कृष्णा कुंज, थानावाथा जैन, टेलपाल मार्ग, विलेपार्ले (ईस्ट) बम्बई-400057।	5-10-88
4.	30738	श्री शरदचन्द्र बी० पटेल, एफ० सी० ए०, जी-80, रत्नीलाल पार्क, दर्रण सोसायटी के सामने, सेंट जेवियर्स हाई स्कूल रोड, अहमदाबाद-380014।	20-10-88	3.	37209	श्री सोरब जल पारदीवाला, मैसर्स शार्प एंड टन्नन, चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट्स, बैंक ऑफ बड़ौदा बिल्डिंग, बॉम्बे समाचार मार्ग, बम्बई-400023।	10-2-89
5.	37235	श्री भरत जी० हिरानी, ए० सी० ए०, मैसर्स बी० हिरानी एंड एसोसिएट्स, 629, लीमडा पोल, बालाहनुमान, खड्गीया, अहमदाबाद-380001।	20-10-88	दिनांक 31 मार्च, 1989			

दिनांक 27 मार्च, 1989

सं० 3 डब्ल्यू० सी० ए० (4) 16/88-89—चार्टर्ड प्राप्त लेखाकार विनियम 1988 के विनियम 18 के अनुसरण में एतद्वारा यह सूचित किया जाता है कि चार्टर्ड प्राप्त लेखाकार अधिनियम 1949 की धारा 20 उपधारा 1 (अ) द्वारा प्रवृत्त अधिकारों का प्रयोग करते हुए भारतीय चार्टर्ड प्राप्त लेखाकार संस्थान परिषद ने अपने सदस्यता रजिस्टर में से मरुतु हो जाने के कारण निम्नलिखित सदस्यों का नाम उनके आगे दी गई तिथि से हटा दिया है :—

क्रम सं०	सदस्यता सं०	नाम एवं पता	दिनांक
1	2	3	4
1.	1256	श्री के० आर० दांडेकर कोलटकर एंड दांडेकर चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट्स, ईस्ट एंड वेस्ट बिल्डिंग, 55, बॉम्बे समाचार मार्ग, बम्बई-400023।	24-8-88

क्रम सं०	सदस्यता सं०	नाम एवं पता	दिनांक
1.	35434	श्री सुभाषचन्द्र पारेख, ए० सी० ए०, चार्टर्ड हाऊस, आफिश नं० 301, तीनरा माला, नवीन रोड चर्च केपास, मरीन लाइन्स, बम्बई-400002	29-9-88
2.	36159	श्री डी० एम० सादी, ए० सी० ए०, टाइप बी/1/2, आर० सी० एफ० कालोनी, स्पोर्ट्स क्लब के पीछे, बेंबूर, बम्बई-400074।	1-3-89

एम० सी० नरसिम्हन,
मेमोटेरी

कलकत्ता-700071, दिनांक 17 मार्च, 1989

नं० 3-ई० सी० ए० (5)/11/88-89—इस संस्थान की अधिसूचना सं० 3-ई० सी० ए० (4)/6/88-89 दिनांक 24-2-89 के सन्दर्भ में चार्टर्ड प्राप्त लेखाकार विनियम 1988 के विनियम 20 के अनुसरण में एतद्वारा यह सूचित किया जाता है कि उक्त विनियमों के विनियम 19 द्वारा प्रदत्त अधिकारों का प्रयोग करते हुए भारतीय चार्टर्ड प्राप्त लेखाकार संस्थान परिषद ने अपने सदस्यता रजिस्टर में निम्नलिखित सदस्यों का नाम पुनः उनके आगे दी गई तिथि से स्थापित कर दिया है।

क्रम सं०	सदस्यता सं०	नाम एवं पता	दिनांक
1.	7504	श्री सुदर्शन मुखर्जी, ए० सी० ए०, 2, गणेश स्ट्रीट, मदाम-600086।	1-10-88
2.	50971	श्री नरेश कुमार जैन, एफ० सी० ए०, मैमर्स नरेश जैन एंड कं., 1-बी, गॉट लेन, 1 फ्लोर, आर० नं० 18ए, कलकत्ता-700012।	1-10-88
3.	51388	श्री राना बसु, ए० सी० ए०, 27/1, एस० एन० राय रोड, कलकत्ता-700038।	1-10-88
4.	51663	श्री सुभा प्रसाद मुखर्जी, ए० सी० ए०, 259, जोधपुर पार्क, कलकत्ता-700068।	1-10-88
5.	51721	श्री सुनिल बरन महापात्रा, ए० सी० ए०, चूरी कोल्लीरी, पी० ओ० रे, डिस्ट० रांची-829209।	1-10-88

एम० सी० नरसिम्हन,
सचिव

मद्रास-600034, दिनांक 31 मार्च 1989

सं० 3-एस० सी० ए० (8)/23/88-89—चार्टर्ड प्राप्त लेखाकार विनियम 1988 के विनियम 10 (1) खण्ड (तीन) के अनुसरण में एतद् द्वारा यह सूचित किया जाता है कि निम्नलिखित सदस्यों को जारी किए प्रैक्टिस प्रमाण पत्र उनके

आगे दी गई तिथि से रद्द कर दिए गए हैं क्योंकि वे अपने प्रैक्टिस प्रमाण पत्र को रखने के इच्छुक नहीं हैं:—

क्रम सं०	सदस्यता सं०	नाम एवं पता	दिनांक
1.	15949	मिसिज के० सरोजा, एफ० सी० ए०, 54, वेंकटनारायना रोड, टी० नगर, मद्रास-600017	1-4-88
2.	20893	श्री एस० मदनलाल जैन, एफ० सी० ए०, 12, कलाठी पिल्लई स्ट्रीट, 1 फ्लोर, सोबकारपेट, मद्रास-600079।	18-3-89
3.	21013	श्री लोकेश कालरा, ए० सी० ए०, 720, चिनमाया मिशन, होस्पिटल रोड, अबव आन्ध्रा बैंक, इंदिरानगर, बंगलूर-560038	1-4-88
4.	22490	श्री पी० सी० प्रेमनाथ, ए० सी० ए०, 8, सध्यामूर्ति रोड, चेटपट, मद्रास-600031।	7-3-89

सं० 3-एस० सी० ए० (5)/22/88-89—इस संस्थान की अधिसूचना सं० 3-एस० सी० ए० (4)/10/87-88 दिनांक 29 जनवरी, 1988 और 3-डब्ल्यू० सी० ए० (4)/11/87-88 दिनांक 5 जनवरी, 1988 के सन्दर्भ में चार्टर्ड प्राप्त लेखाकार विनियम, 1988 के विनियम 20 के अनुसरण में एतद्वारा यह सूचित किया जाता है कि उक्त विनियमों के विनियम 19 द्वारा प्रदत्त अधिकारों का प्रयोग करते हुए भारतीय चार्टर्ड प्राप्त लेखाकार संस्थान परिषद ने अपने सदस्यता रजिस्टर में निम्नलिखित सदस्यों का नाम पुनः उनके आगे दी गई तिथि से स्थापित कर दिया है।

क्रम सं०	सदस्यता सं०	नाम एवं पता	दिनांक
1.	21689	श्री पी० एम० जोसेफ, ए० सी० ए०, केयर आफ परकुमरी गाडीर जैरे, वी० पी० 11997, किनसासा-1, रिपब्लिक आफ जैरे।	1-3-89

1	2	3	4
2.	32013	श्री जयिन्द्र युम्फाली गकडा, एफ० सी० ए०, चाटर्ड एकाउन्टेन्ट, 27366/ए फ़ास, 7 ब्लाक, जयानगर, बंगलौर-560011	5-9-88
एम० सी० नरसिम्हन सचिव			

दी इन्स्टीच्यूट आफ कास्ट एण्ड वर्क्स

एकाउन्टेन्ट्स आफ इंडिया
कलकत्ता, दिनांक 13 मार्च, 1989

सं० 18 सी० डब्ल्यू० आर० (201)/89-बी कास्ट एण्ड वर्क्स एकाउन्टेन्ट्स रेग्युलेशन 1959 के विनियम 18 का अनुसरण कर यह अधिसूचित किया जाता है कि दी इन्स्टीच्यूट आफ कास्ट एण्ड वर्क्स एकाउन्टेन्ट्स आफ इंडिया के परिषद में कहे हुए रेग्युलेशन के विनियम 17 द्वारा दिये गये अधिकारों का प्रयोग करते हुए श्री पारस चन्द्र पाल, बी० काम०, ए० आई० सी० डब्ल्यू० ए०, पी० ओ० बाक्स 9643, घर-इस-सलाम तनजानिया (सदस्यता संख्या एम 5845) के नाम को 12 फरवरी, 1989 से सवस्य पंजिका में पुनः स्थापित किया।

11-सी० डब्ल्यू० आर० (119)/89-बी कास्ट एण्ड वर्क्स एकाउन्टेन्ट्स रेग्युलेशन 1959 के विनियम 11 के उप-विनियम (3) का अनुसरण कर यह सूचित किया जाता है कि श्री एन० जी० जोग, बी० एस० सी०, ए० आई० सी० डब्ल्यू० ए०, बी०-204, प्रभात चेम्बर्स, 685 बुखार पेथू, पुणे-411002, (सदस्यता संख्या एम०/7784) के अभ्यास करने का प्रमाण पत्र उनकी निजी प्रार्थना पर 15 अप्रैल, 1988 से 30 जून, 1989 तक के लिये रद्द किया जाता है।

डी० सी० भट्टाचार्या,
सचिव

कर्मचारी राज्य बीमा निगम

नई दिल्ली, दिनांक 31 मार्च, 1989

संख्या यू-16(53)/87-चि०-2(गुजरात)-कर्मचारी राज्य बीमा (साधारण) विनियम, 1950 के विनियम, 105 के तहत महानिदेशक को निगम की शक्तियां प्रदान करने के संबंध में कर्मचारी राज्य बीमा निगम की दिनांक 25 अप्रैल, 1951 को हुई बैठक में पास किए संकल्प के अनुसरण में तथा महा-निदेशक के आदेश संख्या 1024 (जी) दिनांक 23-5-1983 द्वारा ये शक्तियां आगे मुझे सौंपी जाने पर मैं इसके द्वारा डा० (श्रीमती) ए० जे० पटेल को मानको के अनुसार देय

मासिक पारिश्रमिक पर 2-5-89 से एक वर्ष के लिए या पूर्णकालिक चिकित्सा निर्देशी के कार्यग्रहण करने तक, जो भी पूर्व हो, को उप-चिकित्सा आयुक्त (उत्तर-पश्चिमी जोन) द्वारा निर्धारित अहमदाबाद के क्षेत्रों के लिए बीमाकृत व्यक्तियों की स्वास्थ्य परीक्षा करने तथा मूल प्रमाण पत्र की गत्यता संदिग्ध होने पर उन्हें आगे प्रमाण पत्र जारी करने के प्रयोजन के लिए चिकित्सा अधिकारी के रूप में कार्य करने के लिए प्राधिकृत करता हूँ।

डा० के० एम० सक्सेना,
चिकित्सा आयुक्त

संचार मंत्रालय

डाक विभाग

नई दिल्ली-110001, दिनांक 5 अप्रैल, 1989

सं० 25-3/89-एल० आई०-विभाग की अभिरक्षा से गुम हुई निम्नलिखित डाक जीवन बीमा पालिसियों के बारे में एतद्वारा सूचना दी जाती है कि उनका भुगतान रोक दिया गया है। निदेशक, डाक जीवन बीमा, कलकत्ता को बीमाकर्ताओं के नाम दुहरी पालिसियां जारी करने के लिए प्राधिकृत कर दिया गया है। सर्वसाधारण को चेतावनी दी जाती है कि वे मूल पालिसियों के बारे में लेन-देन न करें।

क्रम सं०	पालिसी सं०	दिनांक का नाम	बीमाकर्ताओं का नाम	राशि (रुपये)
1.	225790- पी० ई०/50	24-6-74	श्री ए० एल० आदित्य	4,000

दिनांक 6 अप्रैल, 1989

सं० 25-6/89-एल० आई०-विभाग की अभिरक्षा से गुम हुई निम्नलिखित डाक जीवन बीमा पालिसियों के बारे में एतद्वारा सूचना दी जाती है कि उनका भुगतान रोक दिया गया है। निदेशक, डाक जीवन बीमा, कलकत्ता को बीमाकर्ताओं के नाम दुहरी पालिसियां जारी करने के लिए प्राधिकृत कर दिया गया है। सर्वसाधारण को चेतावनी दी जाती है कि वे मूल पालिसियों के बारे में लेन-देन न करें।

क्रम सं०	पालिसी सं०	दिनांक	बीमाकर्ताओं का नाम	राशि (रुपये)
1.	267253-सी	1-1-76	श्री बी० बी० जगताप	4,000/-
2.	363324-पी	5-2-79	-वही-	3,000/-

व्योत्सना श्रीश,
निदेशक (पी० एल० आई०)

भारतीय औद्योगिक वित्त निगम

नई दिल्ली, दिनांक 31 मार्च, 1989

सं० 3/89—औद्योगिक वित्त निगम अधिनियम, 1948 की धारा 43 (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए भारतीय औद्योगिक वित्त निगम के निदेशक बोर्ड ने भारतीय औद्योगिक विकास बैंक के अनुमोदन से भा० औ० वि० नि० सामान्य विनियम, 1982 के विनियम संख्या 20(i) तथा 21 में निम्नानुसार संशोधन किए हैं :—

विनियम 20(i) उप पैरा (क) में “30 जून को समाप्त हुए वर्ष” शब्दों के स्थान पर “31 मार्च को समाप्त हुए वर्ष” शब्द प्रतिस्थापित किए जाएंगे।

विनियम 21 इस विनियम में “30 जून के बाद” शब्दों के स्थान पर “31 मार्च के बाद” शब्द प्रतिस्थापित किए जाएंगे।

एम० के० ऋषि,
कार्यपालक निदेशक

नई दिल्ली, दिनांक 7 अप्रैल, 1989

सं० 4/89—औद्योगिक वित्त निगम अधिनियम, 1948 (1948 का 15) की धारा 43 (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए भारतीय औद्योगिक वित्त निगम के निदेशक बोर्ड ने भारतीय औद्योगिक विकास बैंक के अनुमोदन से भारतीय औद्योगिक वित्त निगम कर्मचारी भविष्य निधि विनियमों के विनियम संख्या 4, 9 तथा 13 में निम्नानुसार संशोधन किए हैं :—

विनियम 4

इस विनियम में “30 जून” तथा “31 अक्टूबर” श्रंकों एवं शब्दों के स्थान पर क्रमशः “31 मार्च” तथा “31 जुलाई” श्रंक एवं शब्द प्रतिस्थापित किए जाएंगे।

विनियम 9

इस विनियम में, “30 जून” तथा “31 दिसम्बर” श्रंकों एवं शब्दों के स्थान पर क्रमशः “31 मार्च” तथा “30 सितम्बर” श्रंक एवं शब्द प्रतिस्थापित किए जाएंगे।

विनियम 13

विद्यमान विनियम को विलोपित करके उसके स्थान पर निम्न को प्रतिस्थापित किया जाएगा :—

निधि की बहियों में किसी भी अभिदाता के खाते में जमा सभी राशियों पर निम्नलिखित अनुसार ब्याज लगाना बंद हो जाएगा—

(क) उसके द्वारा निगम की सेवा छोड़ने के दिन से छः महीने की अवधि समाप्त होने पर, अथवा

(ख) यदि वह अवकाश की किसी अवधि, जो कि ऐसा अवकाश न होने की तिथि में निगम की सेवा

में उसके सेवा-निवृत्त होने की तिथि से या उसके बाद की तिथि से शुरू हुई है, की समाप्ति पर निगम की सेवा छोड़ता है या ऐसे अवकाश की अवधि के दौरान उसकी मृत्यु हो जाती है, अवकाश की उक्त अवधि के शुरू होने के दिन से छः महीने की अवधि समाप्त होने पर, अथवा

(ग) यदि ऊपर खण्ड (ख) में वर्णित परिस्थितियों में अन्यथा, निगम की सेवा छोड़ने से पूर्व ही उसकी मृत्यु हो जाती है तो उसकी मृत्यु की तारीख से छः महीने की अवधि समाप्त होने पर ;

परन्तु निम्नलिखित किसी भी मामले में उक्त छः महीने की अवधि समाप्त होने पर से पूर्व भी ऐसा हो सकता है :

(i) अभिदाता के अनुरोध पर या किसी अन्य व्यक्ति के अनुरोध पर, जिसे कि विनियम 16 के अधीन राशि की अदायगी संदेय है, उक्त राशियों या उनके किसी भाग का संवितरण किया जाना प्राधिकृत है, या

(ii) न्यायालय या ट्रिब्यूनल के किसी आदेश के अनुसरण में उक्त राशियों या उनके किसी भाग की ऐसे न्यायालय या ट्रिब्यूनल के आदेशानुसार अदायगी की जाएगी, उक्त राशियों पर या उनके किसी भाग पर, जैसा भी मामला हो, उक्त राशियों या उनके किसी भाग का संवितरण करना प्राधिकृत किए जाने की तारीख से या ऐसे न्यायालय या ट्रिब्यूनल के आदेशानुसार उक्त को अदा किए जाने की तारीख से, जैसा भी मामला हो, ब्याज लगाना बंद हो जाएगा।

“परन्तु यह भी कि उक्त संदर्भित छः महीने की अवधि के समाप्त होने के बाद भी, निगम एकमात्र स्व-विवेक से तथा ऐसा करने की किसी बाध्यता के न होते हुए भी निधि की बहियों में अभिदाता के खाते में जमा राशियों पर आगामी एक वर्ष से अनाधिक अवधि के लिए ब्याज लगाने की अनुमति दे सकता है, यदि निगम संतुष्ट हो कि अभिदाता को या उसके नामिती या नामितियों को या उसके विधिक प्रतिनिधियों को, जैसा भी मामला हो, ऐसी राशियों की अदायगी न होना अभिदाता, या उसके नामित या नामितियों या विधिक प्रतिनिधियों, जैसा भी मामला हो, के किसी दोष या गलती के कारण नहीं है।”

2. भारतीय औद्योगिक वित्त निगम कर्मचारी भविष्य निधि विनियमों की अद्यतन प्रति सभी संबंधित व्यक्तियों की सूचनाार्थ परिशिष्ट के रूप में संलग्न है।

एच० सी० शर्मा,
सहायक

भारतीय औद्योगिक वित्त निगम

[औद्योगिक वित्त निगम अधिनियम, 1948 (1948 का XV)
के अधीन निगमित]

भारतीय औद्योगिक वित्त निगम
कर्मचारी भविष्य निधि विनियम

17 मार्च, 1989 तथा यथा संशोधित

औद्योगिक वित्त निगम अधिनियम, 1948 (1948 का XV)
की धारा 43 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का उपयोग करते हुए, निदेशक
बोर्ड ने रिजर्व बैंक से परामर्श करने के बाद और भारत सरकार
के पूर्व अनुमोदन से निम्नलिखित विनियम बनाए हैं, जिन्हें भारतीय
औद्योगिक वित्त निगम कर्मचारी भविष्य निधि विनियम, 1948
कहा जाएगा :—

1. संस्थापना

एक निधि की स्थापना की जायेगी जिसे “भारतीय औद्योगिक
वित्त निगम कर्मचारी भविष्य निधि” कहा जाएगा ।

2. प्रबन्ध

यह निधि निगम के द्वारा रखी जाएगी और इसका प्रबन्ध
प्रशासकों की एक समिति, जिसमें अध्यक्ष, बोर्ड द्वारा नामित तीन
अन्य निदेशक, एक कार्यपालक निदेशक/महाप्रबन्धक और 3
व्यक्तियों, जिनमें से एक अधीनस्थ, दूसरा लिपिकीय स्टाफ
और तीसरा अधीनस्थ स्टाफ के कर्मचारियों का प्रतिनिधित्व
करेगा, द्वारा किया जाएगा; इन सभी चारों का नामांकन अध्यक्ष
द्वारा किया जाएगा । विभिन्न विनियमों के अधीन उन्हें प्रदत्त
की गई विशिष्ट शक्तियों पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना निधि
के प्रशासक इन विनियमों के अधीन सभी शक्तियों का प्रयोग
करने के हकदार होंगे और इन विनियमों के अधीन निधि की ओर
से सभी कार्य तथा कृत्य कर सकेंगे ।

3. प्रशासकों की बैठकें

प्रशासकों की हर बैठक में अध्यक्ष अथवा उसकी अनुपस्थिति
में उसके द्वारा लिखित रूप से प्राधिकृत एक निदेशक उसकी ओर
से अध्यक्षता करेगा । कार्य संचालन के लिए गण-संख्या
अध्यक्ष अथवा उसके द्वारा लिखित रूप से प्राधिकृत निदेशक
सहित कम से कम तीन प्रशासकों की उपस्थिति अनिवार्य है ।
प्रत्येक प्रशासक का एक मत होगा और मत बराबर होने पर सभी
सामलों में अध्यक्ष का मत निर्णायक होगा ।

4. लेखों का विवरण

निधि के लेखे प्रत्येक वर्ष 31 मार्च की स्थिति के अनुसार
तैयार किए जायेंगे और उक्त तारीख के अनुसार प्रत्येक वर्ष
लेखों की लेखा-परीक्षित सारणी 31 जुलाई अथवा प्रशासकों
द्वारा अनुमत्य ऐसी बाद की तारीख तक प्रशासकों की बैठक में
प्रस्तुत की जाएगी और इस बैठक के यथासंभव तत्काल बाद
ऐसी सारणी की एक प्रति प्रत्येक कार्यालय तथा शाखा के अभि-
दाताओं को उपलब्ध कराई जाएगी ।

5. सदस्यता की अनिवार्यता

- (i) निगम के प्रत्येक स्थायी कर्मचारी के लिए निधि में
अभिदान करना बाध्य होगा ।
- (ii) परीक्षा द्वारा नियुक्त किया गया कर्मचारी यदि
पुष्टीकृत हो जाये, तो वह स्थायी कर्मचारी हो जाएगा
और इन विनियमों के उद्देश्य के लिए उसे उसकी नियुक्ति
की प्रथम तिथि से स्थायी मान लिया जायेगा ।
- (iii) (क) यदि प्रशासक स्वीकृति दें, तो अस्थायी कर्म-
चारी जो किसी अन्य भविष्य निधि में अभि-
दान नहीं कर रहा हो, तो निधि में अभिदान
कर सकता है ।
- (ख) कोई भी अन्य व्यक्ति जिसे निगम से नैमित्तिक
पारिश्रमिक से भिन्न पारिश्रमिक मिलता है,
तो वह प्रशासकों की स्वीकृति से निधि में
अभिदान कर सकता है :

परन्तु यह कि ऐसे व्यक्ति के निधि खाते में कोई राशि जमा
है और वह विनियम 14 की शर्तों के अनुसार उसे देय हो गई है तो
कुछ विशेष मामलों को छोड़कर राशि, प्रशासकों की स्वीकृति
से उसके खाते में तब तक जमा रहेगी जब तक वह निगम से
नैमित्तिक पारिश्रमिक से भिन्न पारिश्रमिक प्राप्त करता रहेगा,
विनियम 13 पर विपरीत प्रभाव डाले बिना इस राशि पर व्याज
जमा होता रहेगा ।

5क. कोई कर्मचारी प्रशासकों की स्वीकृति से यदि विनियम
5 के अनुसार अभिदान करता है अथवा अभिदान करने की स्वीकृति
लेता है, तो उसके पूर्व नियुक्ता अथवा नियुक्ताओं से उसे प्राप्त
कोई राशि अथवा उसके नियुक्ता अथवा नियुक्ताओं द्वारा
उसकी सेवाओं के लिए निवृत्ति लाभ उसके खाते में जमा हो
सकता है :

परन्तु यह कि निधि में जमा की गई ऐसी किसी राशि के लिए
निगम को कोई अंशदान न करना पड़े ।

6. अभिदान की दर

अभिदाता निधि में, अपने वेतन के न्यूनतम 10% की दर से,
उसके द्वारा अभिदान शुरू करने की तारीख से मासिक अभिदान
करेगा ।

यह अभिदान निगम द्वारा अभिदाता को प्रतिमास देय वेतन
में से आधा रुपया के समीपतम तक काट लिया जाएगा । निगम
का अंशदान विनियम 8 के अनुसार निर्धारित रहेगा । अतिरिक्त
अभिदान, यदि कोई हो, कोई, की दर सहित एक बार निर्धारित
की गई दर पूरे एक वर्ष अपरिवर्तित रहेगी ।

7. अभिदाता का छुट्टी के दौरान अभिदान

(1) प्रत्येक अभिदाता छुट्टी पर या इतर सेवा के दौरान
निधि में अभिदान करेगा लेकिन निलम्बन अवधि के दौरान नहीं
करेगा ;

परन्तु यह कि अभिदाता को, निलम्बन अवधि व्यतीत हो जाने के पश्चात् बहाल किए जाने पर, उस अवधि के लिए अनु-मत्य बकाया अभिदानों की अधिकतम राशि तक कोई भी राशि एक मुश्त अथवा किस्तों में अदा करने के विकल्प की अनुमति होगी।

(2) अभिदाता, अपने विकल्प पर, ऐसी किसी छुट्टी के दौरान अभिदान नहीं कर सकता जिस पर या तो कोई अवकाश वेतन न हो अथवा जिस पर अर्ध वेतन या अर्ध औसत वेतन के बराबर या उससे कम अवकाश वेतन हो।

(3) अभिदाता, उप-विनियम (2) में उल्लिखित अवकाश के दौरान अभिदान न करने के अपने विकल्प की लिखित सूचना उसे अदायगी करने के लिए उत्तरदायी अधिकारी को देगा।

8. निगम का अंशदान

इन विनियमों में अन्यथा उपबन्धित के सिवाय, निगम का अंशदान अभिदाता के लेख में उसके वेतन के 10 प्रतिशत के बराबर होगा :

परन्तु यह कि उन अभिदाताओं के सम्बन्ध में निगम कोई अभिदान नहीं करेगा जिन्हें विनियम 5 के उप-विनियम (iii), के अधीन अभिदान करने की अनुमति दी गई हो। इसके अतिरिक्त यह कि पूर्ववर्ती परन्तुक में से कुछ भी ऐसे अभिदाता पर लागू नहीं होगा जिसकी नियुक्ति संविद में, निगम द्वारा अभिदान की अदायगी तथा ऐसी अदायगी का नियंत्रण करने वाली शर्तों की विशेष रूप से व्यवस्था हो :

परन्तु यह भी कि विनियम 5 के उप-विनियम (iii) के अधीन अभिदान करने वाले अस्थायी कर्मचारी के मामले में, जिसे बाद में निगम के स्थायी नियोजन में ले लिया जाता है, कर्मचारी को स्थायी किए जाने पर निगम उनकी अस्थायी सेवा के दौरान उसके द्वारा अभिदान की गई राशि के बराबर अंशदान करेगा।

परन्तु यह और कि विनियम 5 के उप-विनियम (iii) के खण्ड (ख) के अन्तर्गत अभिदान करने के लिए अनुमति प्राप्त अभिदाता के सम्बन्ध में निगम, अंशदान करने के लिए केवल तभी उत्तरदायी होगा यदि ऐसी अभिदाता की सेवा शर्तों में निगम द्वारा ऐसा अंशदान किए जाने की व्यवस्था हो।

स्पष्टीकरण :

इस विनियम और विनियम 6 के लिए कर्मचारी द्वारा ली गई राशि जो 'वेतन' होगी—

- (i) उसके पद का वह स्वीकृत वेतन जो उसे बाद में अथवा स्थानापन्न की हैसियत से अथवा उसके कैंडिडेट स्थिति के अनुसार जिसे वह प्राप्त करने का अधिकारी है ;
- (ii) समुद्रपार वेतन, विशेष वेतन और वैयक्तिक वेतन ;
- (iii) कोई अन्य परिलब्धियां जिन्हें बोर्ड ने विशेषतः वेतन के रूप में वर्गीकृत किया हो।

9. व्याज

निगम प्रत्येक अभिदाता के खाते में जमा राशियों पर प्रत्येक अर्ध-वर्ष की समाप्ति पर निगम द्वारा यथा निर्धारित दर से व्याज की राशि जमा करेगा जो इस सम्बन्ध में केन्द्रीय सरकार के द्वारा बनाए गए, निर्धारित अथवा दिए गए नियमों, योजनाओं अथवा निर्देशों के अनुरूप अन्य भविष्य निधियों, धर्मार्थ, धार्मिक और न्यास तथा अर्धन्यास निधियों, में निवेश की गई निधियों से प्राप्त प्रतिफल के अनुसार निर्धारित की जाएगी। व्याज अभिदाता के खाते पर मासिक गुणनफल आधार पर पैसे के समीपतम तक गणन किया जाएगा तथा 31 मार्च और 30 सितम्बर की स्थिति पर अर्धवार्षिक आधार पर लगाया जाएगा।

10. प्रत्येक अभिदाता के खाते का वार्षिक व्यौरा

प्रत्येक अभिदाता को निधि के प्रशासकों की ओर से खाते में उसकी जमा रकम दिखाने वाली वार्षिक विवरणिका प्राप्त होगी।

11. निधि से उधार

(1) निगम के स्वविवेक से अभिदाता को अस्थायी अग्रिम, जो किसी भी दशा में उसके अभिदान तथा उस पर लगे व्याज अधिक न होगा, अर्वेदन करने पर निम्नलिखित शर्तों के अनुसार दिया जा सकता है :—

(क) निगम आप्रवस्त है कि राशि निम्न उद्देश्य अथवा उद्देश्यों पर खर्च की जाएगी अन्यथा नहीं :—

(i) अभिदाता अथवा उस पर वास्तविक रूप से आश्रित व्यक्ति की बीमारी, परिरोध, अथवा विकलांगता, जहां आवश्यक हो यात्रा व्यय सहित खर्चों की अदायगी के लिए;

(ii) अभिदाता अथवा उस पर वास्तविक रूप से आश्रित व्यक्ति की निम्न मामलों में उच्च शिक्षा पर जहां आवश्यक हो यात्रा व्यय सहित, व्यय के लिए, अर्थात्—

(क) हाई स्कूल स्तर के बाद भारत के बाहर शैक्षणिक तकनीकी, व्यावसायिक अथवा वृत्तिक पाठ्यक्रमों के लिए; और

(ख) स्कूल में सफलतापूर्वक 10 वर्ष अध्ययन करने के पश्चात् किसी मान्यताप्राप्त संस्थान से डाक्टरी, इंजीनियरिंग, तकनीकी, वृत्ति अथवा विशिष्ट व्यावसायिक पाठ्यक्रम के लिए, जिससे डिग्री/डिप्लोमा अथवा सर्टिफिकेट प्राप्त हो।

(iii) अभिदाता, अथवा उसकी सन्तान अथवा उस पर वास्तविक रूप से आश्रित किसी अन्य व्यक्ति के विवाह, अनुष्ठान पर व्यय के लिए, जो उसके स्तर के अनुकूल तथा सामाजिक प्रथा अनुसार अनिवार्य हो :

परन्तु यह कि वास्तव में आश्रित होने की शर्त पुत्र अथवा पुत्री के मामले में अथवा अभिदाता के माता-पिता के दाह-संस्कार पर व्यय के लिए अपेक्षित अग्रिम के मामले में लागू नहीं होगी।

- (iv) अभिदाता द्वारा उसके पदीय कर्तव्य के सम्बन्ध में लगाए गए आरोपों से दोषमुक्ति पाने के लिए की गई विधिक कार्रवाई पर व्यय के लिए, इस मामले में यह अग्रिम उसी प्रयोजन के लिए स्वीकार्य निगम के किसी अन्य स्रोत के अतिरिक्त होगा :

परन्तु यह कि इस उप-खण्ड के अधीन उस अभिदाता को अग्रिम नहीं मिलेगा जो निगम के विरुद्ध किसी न्यायालय में पदीय कर्तव्य से असम्बन्धित अथवा नौकरी की शर्तों अथवा उस पर लगाए गए दण्ड के किसी मामले में कानूनी कार्रवाई करता है;

- (v) किसी भी न्यायालय में निगम द्वारा अभियोग चलाने पर अभिदाता को अपने बचाव पर व्यय के लिए;

- (vi) किसी अन्य व्यय अथवा देयता जो निगम की दृष्टि में अप्रत्याशित और विशेष तथा अभिदाता के सामान्य साधनों से बाहर हो, को पूरा करने के लिए ।

- (ख) निगम के द्वारा अग्रिम विशेष कारणों के अतिरिक्त लिखित रूप में अंकित नहीं किया जायेगा;

- (i) तीन मास के वेतन से अधिक ('वेतन' जैसा विनियम 8 के स्पष्टीकरण में परिभाषा दी गई है) अथवा अभिदाता के निधि में व्याज सहित अभिदान का आधा, जो भी कम हो, या

- (ii) पूर्व अग्रिम की अन्तिम अदायगी तक ।

(2) (क) अभिदाता से अग्रिम की वसूली निगम द्वारा निर्धारित समान मासिक किस्तों में की जायेगी जिनकी संख्या अभिदाता की इच्छा के बिना 12 से कम अथवा किसी भी दशा में 24 से ज्यादा नहीं होगी, परन्तु कि विशेष मामलों में जहां उप-विनियम (1) के खण्ड (ख) की शर्तों के अधीन अग्रिम अभिदाता के तीन मास के वेतन से अधिक हो, तो निगम, किस्तों की संख्या 24 से अधिक परन्तु जो 36 से ज्यादा नहीं होगी, निर्धारित कर सकता है। अभिदाता स्वेच्छा से एक मास में एक से अधिक किस्तें अदा कर सकता है। प्रत्येक किस्त पूरे रूपों में होगी और आवश्यकतानुसार किस्त निश्चित करने के लिए अग्रिम की राशि घटाई अथवा बढ़ाई जा सकती है।

(ख) अग्रिम लेने के बाद जब अभिदाता पहली बार पूरे मास का वेतन प्राप्त कर लेगा तो वसूलियां शुरू हो जायेंगी। यदि अभिदाता पूर्ण आसत वेतन छुट्टी से अन्य छुट्टी अथवा निर्वाह अनुदान प्राप्त कर रहा है, तो अभिदाता की इच्छा के बिना वसूली नहीं की जाएगी।

(ग) इस विनियम के अधीन की गई वसूलियां अभिदाता के निधि खाते में जमा कर दी जायेंगी।

11. क. (1) निगम के स्वविभेक से कुछ शर्तों तथा सीमाओं के अधीन अभिदाता के आवेदन पर निधि से अथवा उन पर आश्रित व्यक्ति के लिए उचित मकान अथवा परिसर प्राप्त करने के एक

मात्र उद्देश्य से सहकारी हाउसिंग समिति के शेयर खरीदने अथवा कोई अन्य जमा कराने अथवा जमानत के तौर पर रुपया जमा कराने के लिए अग्रिम दिया जा सकता है।

(2) इस विनियम के अधीन अग्रिम की कर्मचारी के सेवा-काल में केवल एक ही बार अनुमति मिलेगी, जो उसके निधि में व्याज सहित जमा राशि अथवा आवेदित अग्रिम के वास्तविक उद्देश्य के लिए जरूरी अपेक्षित राशि जो भी कम हो, से ज्यादा नहीं होगी।

(3) इस विनियम के अधीन वसूली की किस्तें, राशि निगम द्वारा निर्धारित की जायेंगी, पर किसी भी मामले में किस्तों की संख्या 120 से अधिक नहीं होगी। अभिदाता स्वेच्छा से एक मास में एक से अधिक किस्त दे सकता है, परन्तु किस्त पूरे रूपों में होगी।

12. बीमा पालिसियां आदि

- (1) निम्न को पूरा करने के लिए राशियां :—

(क) अपने कर्मचारियों के लिए निगम द्वारा पोषित परिवार निवृत्ति निधि में अभिदान; अथवा

(ख) अभिदाता के जीवन पर निगम से अनुमोदित तथा पोषित बीमा पालिसी के लिए अदायगियां।

निधि के अभिदान से दी जा सकती है या अभिदाता द्वारा अभिदान की गई राशि (जिस में व्याज भी शामिल है) से निकाली जा सकती है। विनियम 8 के अधीन निगम के अंशदान का गणन करने के उद्देश्य से इस प्रकार वंशित राशि अभिदान का भाग मानी जायेगी।

(2) जहां उप-विनियम 1(ख) के अधीन अभिदान की गई राशि में से ऐसी बीमा पालिसी जो वंशित है अथवा अदा कर दी गई, बीमा किस्त अदायगी के लिए पालिसी निगम द्वारा लगाई शर्तों के अधीन, यदि बीमाधारी से कुछ बचाया हो, की वसूल करने के लिए, निगम को अन्तर्गत कर दी जायेगी।

13. अभिदाता की सेवा की समाप्ति अथवा मृत्यु होने पर व्याज लगना बन्द

विनियम 13

वर्तमान विनियम को विलोपित करके उसके स्थान पर निम्न को प्रतिस्थापित किया जाएगा—

निधि की बहियों में किसी भी अभिदाता के खाते में जमा सभी राशियों पर निम्नलिखित अनुसार व्याज लगना बंध हो जाएगा—

- (क) उसके द्वारा निगम की सेवा छोड़ने के दिन से छ. महीने की अवधि समाप्त होने पर, अथवा

- (ख) यदि वह अवकाश की किसी अवधि, जो कि ऐसा अवकाश न होने की स्थिति में निगम की सेवा से उसके सेवा-निवृत्त होने की तिथि से या उसके बाद की तिथि में शुरू हुई है, की समाप्ति पर निगम की सेवा छोड़ता है या ऐसे अवकाश की अवधि के दौरान उसकी मृत्यु

हो जाती है, अवकाश की उक्त अवधि के शुरू होने के दिन से छः महीने की अवधि समाप्त होने पर, अथवा

(ग) यदि ऊपर खण्ड (ख) में वर्णित परिस्थितियों में अन्यथा, निगम की सेवा छोड़ने से पूर्व ही उसकी मृत्यु हो जाती है तो उसकी मृत्यु की तारीख से छः महीने की अवधि समाप्त होने पर ;

परन्तु निम्नलिखित किसी भी मामले में उक्त छः महीने की अवधि समाप्त होने से पूर्व भी ऐसा हो सकता है :

- (i) अभिदाता के अनुरोध पर या किसी अन्य व्यक्ति के अनुरोध पर, जिसे कि विनियम 16 के अधीन राशि को अदायगी संदेय है, उक्त राशियों या उनके किसी भाग का संवितरण किया जाना प्राधिकृत है, या
- (ii) न्यायालय या ट्रिब्यूनल के किसी आदेश के अनुसरण में उक्त राशियों या उनके किसी भाग की ऐसे न्यायालय या ट्रिब्यूनल के आदेशानुसार अदायगी की जाएगी, उक्त राशियों पर या उनके किसी भाग पर, जैसा भी मामला हो, उक्त राशियों या उनके किसी भाग का संवितरण करना प्राधिकृत किए जाने की तारीख से या ऐसे न्यायालय या ट्रिब्यूनल के आदेशानुसार उक्त को अदा किए जाने की तारीख से, जैसा भी मामला हो, ब्याज लगना बन्द हो जाएगा ।

“परन्तु यह भी उक्त संदर्भित छः महीने की अवधि के समाप्त होने के बाद भी, निगम एकमात्र स्व-विवेक से तथा ऐसा करने की किसी बाध्यता के न होते हुए भी निधि की बहियों में अभिदाता के खाते में जमा राशियों पर आगामी एक वर्ष से अनधिक अवधि के लिए ब्याज लगाने की अनुमति दे सकता है, यदि निगम संतुष्ट हो कि अभिदाता को या उसके नामित या नाभिनियों को या उसके विधिक प्रतिनिधियों को, जैसा भी मामला हो, ऐसी राशियों की अदायगी न होना अभिदाता, या उसके नामित या नाभिनियों या विधिक प्रतिनिधियों, जैसा भी मामला हो, के किसी दोष या गलती के कारण नहीं है ।”

14. अभिदाता के खाते में जमा राशि की अदायगी

अभिदाता की सेवा की समाप्ति अथवा उसकी मृत्यु के बाद खाते में जमा राशि देय हो जायगी :

परन्तु यह कि अभिदाता निवृत्ति पूर्व छुट्टी पर चाहे तो निधि में से अपने अभिदान तथा उस पर ब्याज के बराबर राशि निकाल सकता है :

परन्तु यह भी कि अभिदाता अथवा अन्य कोई व्यक्ति जो विनियम 5 के खण्ड (iii) के उप-खण्ड (ख) के अधीन अभिदान करता है, यदि धन उप विनियम 2 (ख) के खण्ड (ii), (iii) और (iv) में विनिर्दिष्ट प्रयोजनों के लिए लिया गया है तो 15 वर्ष की सेवा पूरी करने के बाद, या बीस वर्ष की सेवा पूरी करने के बाद किसी समय अथवा सेवा निवृत्ति से 10 वर्ष तुरन्त पहले अथवा उसके कार्य काल की विशिष्ट अवधि के बाद, जैसा भी मामला

हो, निगम के स्वविवेक से, विनियम 14 के में उल्लिखित राशि तक, उप-विनियम (2), (3) और (4) में वर्णित उद्देश्यों, शर्तों के अनुसार निधि में से धन निकाल सकता है ।

परन्तु और यह कि और इन शर्तों के अधीन कि ऐसी कोई कटीती न की जाए जिससे निधि में अभिदाता के खाते में बकाया राशि को निधि में से अदा करने से पहले, जमा राशि विनियम 8 और 9 के अन्तर्गत निगम द्वारा किए गए अंशदान और उस पर ब्याज की राशि से अधिक कम हो जाए, तथा अधिकारियों के मामले में बोर्ड और अन्यो के मामलों में अध्यक्ष उससे निम्नलिखित कटीती करके निगम को अदा करने का निदेश दे सकता है—

(क) निगम के प्रति अभिदाता की देयता के अन्तर्गत देय कोई राशि ।

(ख) यदि अभिदाता के कदाचार, दिवालियेपन या अक्षमता के कारण सेवा से बर्खास्त कर दिया गया हो अथवा यदि अभिदाता ने, अस्थायी सेवा सहित अपनी पांच वर्ष की लगातार सेवा से पहले त्याग पत्र दे दिया हो अथवा यदि वह मृत्यु, सेवा-निवृत्ति सक्षम चिकित्सा प्राधिकारी द्वारा घोषणा किए जाने पर कि वह सेवा करने के लिए अनुपयुक्त है अथवा पद के समाप्त किए जाने या स्थापना कम करने के कारणों से भिन्न कारणों से निगम का कर्मचारी नहीं रहता तो ऐसे अंशदान तथा ब्याज की सभी राशियां :

टिप्पणी (1) —

उपर्युक्त (ख) के अन्तर्गत बर्खास्तगी के मामलों में यदि यथास्थिति बोर्ड का अध्यक्ष आश्वस्त है कि ऐसी कटीती से अभिदाता को विशेष कठिनाई का सामना करना पड़ेगा तो यदि वह बीमारी के कारण सेवा-निवृत्त हुआ हो तो बोर्ड या अध्यक्ष आदेश द्वारा, अभिदाता को देय हो गए ऐसे अंशदान और ब्याज की अधिकतम दो तिहाई राशि को ऐसी कटीती से छूट दे सकता है । यदि उसकी बर्खास्तगी का ऐसा कोई आदेश बाद में रद्द कर दिया जाता है तो सेवा में उसे बहाल किए जाने पर, इस प्रकार कटी गई राशि निधि में उसके खाते में पुनः जमा कर दी जाएगी ।

टिप्पणी (2) —

केन्द्रीय सरकार या राज्य सरकार या सरकार के स्वामित्व या नियंत्रण में निगमित निकाय अथवा सोसायटी पंजीकरण अधिनियम, 1860 (1860 का 21) के अधीन पंजीकृत किसी स्वायत्त संगठन में नियुक्ति लेने के लिए बिना किसी सेवा-भंग के और निगम की उचित अनुमति से सेवा से त्यागपत्र को, निगम की सेवा से त्यागपत्र के रूप में नहीं माना जाएगा ।

(2) (क) निगम द्वारा लगाये नियमों तथा शर्तों के अनुसार उप-विनियम (1) के दूसरे परन्तुक के अधीन धन निकालने की मंजूरी दी जा सकती है—

(i) अभिदाता पर वास्तविक रूप से आश्रित, निम्नलिखित मामलों में उसके किसी बच्चे की उच्च

शिक्षा, जहां जरूरी हो यात्रा व्यय सहित खर्च के लिये, अर्थात्—

- (1) हाई स्कूल स्तर के बाद भारत से बाहर शैक्षणिक, तकनीकी, व्यावसायिक अथवा वृत्तिक पाठ्यक्रमों के लिये; और
- (2) स्कूल में सफलतापूर्वक 10 वर्ष अध्ययन करने के पश्चात् किसी मान्यताप्राप्त संस्थान से डाक्टरी, इंजीनियरिंग, तकनीकी, वृत्तिक अथवा विशिष्ट व्यावसायिक पाठ्यक्रम के लिए, जिसने डिग्री/डिप्लोमा अथवा सर्टिफिकेट प्राप्त हो।

- (ii) अभिदाता के पुत्र अथवा पुत्री और यदि उसकी कोई पुत्री न हो तो उस पर आश्रित कन्या के विवाह पर व्यय के लिये;
- (iii) अभिदाता अथवा उस पर वास्तविक रूप से आश्रित व्यक्ति की बीमारी, जहां जरूरी हो यात्रा व्यय सहित खर्चों के लिये:

परन्तु यह कि इस प्रकार निकासी गई राशि को अभिदाता स्वेच्छा से पूरी अथवा उसका कुछ भाग निधि में वापिस लौटा देगा।

(ख) खण्ड (ग) में (अ) की शर्तों के अनुसार उप-विनियम (1) के दूसरे परन्तुक के अधीन भी निम्नलिखित उद्देश्यों के लिए धन निकाला जा सकता है, अर्थात्:—

- (i) मकान अथवा मकान बनाने के लिए स्थान खरीदना;
- (ii) अभिदाता या अभिदाता की पत्नी/पति या दोनों के संयुक्त नाम, जैसा भी मामला हो, के भूखण्ड पर मकान बनाना बशर्ते पत्नी/पति इन विनियमों के अधीन नामित हैं और इस प्रकार का नामांकन धन निकालने के लिए प्रस्तुत किए गए आवेदन की तारीख को प्रवृत्त हैं;
- (iii) ऐसी खरीद अथवा निर्माण के लिए ऋण की अदायगी (इसमें ऋण मकान अथवा जमीन अथवा निर्मित मकान पर प्रतिभूत होना चाहिए);
- (iv) अभिदाता के पास पहले से अथवा उपाजित मकान का पुनर्निर्माण अथवा विस्तार करने, या पतृक मकान जिसमें, अभिदाता पर लागू स्वीय विधि के अधीन अभिदाता का हित है;
- (v) मकान या जमीन अजित करने के सम्बन्ध में स्टाम्प शुल्क और रजिस्ट्रीकरण प्रभारों का भुगतान। परन्तु एक से अधिक मकान या जमीन खरीदने के लिए, विनियम 14 के उप-विनियम (4) (घ) में दिये गए मामले के सिवाय, धन नहीं निकालने दिया जाएगा।

(ग) अभिदाता द्वारा खरीद अथवा निर्मित किया गया मकान, अभिदाता के अपने लिए स्थान और उसके अपने

लिए मकान निर्माण हेतु होना चाहिए; मकान अथवा स्थान अभिदाता के कार्य-स्थल अथवा उस स्थान पर होना चाहिए, जिसे उसने निवृत्ति के बाद रहने का स्थान लिखित रूप में घोषित किया हो।

(घ) इस प्रकार निकालने के लिए स्वीकृत राशि वास्तविक उद्देश्य के लिए जरूरी रकम से ज्यादा नहीं होगी, कोई भी ज्यादा ली गई राशि बाद में वापिस कर दी जायेगी।

(ङ) अभिदाता को, किसी भी समय, निम्नलिखित मामलों में, जैसा निगम निर्देश करे, आश्वस्त करने को कहा जा सकता है, अर्थात्—

- (i) रकम निकालने के लिए मांगी गई स्वीकृति जो मिल गई है अथवा मांगी गई है, और जिसके लिए निवेदन किया है, उन्हीं वास्तविक उद्देश्यों के लिए है।
- (ii) कि आहरण के लिए अपेक्षित या आहरित किए जाने के लिए स्वीकृत राशि, अभिदाता को उपलब्ध अन्य निधियों, यदि कोई हो, सहित उस प्रयोजन के लिए पर्याप्त है, जिसके लिए आहरण अपेक्षित है अथवा स्वीकृत किया गया है।
- (iii) अभिदाता ने मकान अथवा स्थान पर उचित हक प्राप्त कर लिया है अथवा कर लेगा, या अभिदाता की पत्नी/पति या दोनों के संयुक्त नाम से उपलब्ध स्थान पर जहां निर्माण करना है, उचित हक प्राप्त कर लिया है अथवा कर लेंगे।
- (iv) अभिदाता ने मकान के निर्माण के लिए सभी आवश्यक स्वीकृतियां और अनुमोदन प्राप्त कर लिए अथवा कर लेगा;

और अभिदाता इन सभी अपेक्षाओं का अनुपालन करेगा।

(च) जब धन मकान बनाने के लिए लिया जाये, तो अभिदाता के पूरी राशि अथवा उसका कोई भाग लेने के छः मास के भीतर अथवा ऐसी अवधि में जो निगम मंजूर करे, भवन बनना शुरू हो जायेगा; और अठारह मास से पहले अथवा ऐसी अवधि से पहले जो निगम मंजूर करे; भवन पूरा हो जाएगा।

(छ) यदि यह आहरण किसी ऋण की पुनर्अदायगी के लिये हो तो ऐसी पुनर्अदायगी अभिदाता द्वारा आहरित राशि या उसका कोई भाग लेने की तारीख से तीन महीने के भीतर कर दी जानी चाहिए।

(ज) जहां यह धन भवन निर्माण के लिए लिया जाए, तो राशि, भवन निर्माण की प्रगति के आधार पर ऐसे अरसे अथवा अरसों में जो निगम निश्चित करे, किस्तों में दी जाएगी।

(झ) अभिदाता निगम की पूर्व स्वीकृति के बिना स्थान अथवा मकान का परिवर्तन, गिरवी अथवा

अन्यथा अन्य संक्रांत नहीं करेगा, अवहेलना किए जाने पर अभिदाता को सारी राशि एक ही किस्म में लौटानी होगी।

(2) उस प्रकार ली गई राशि को अभिदाता स्वेच्छा से पूरा अथवा उसका कुछ भाग निधि को लौटा सकता है।

(3) उप-विनियम (2) के उद्देश्य के लिए 'मकान की खरीद' अभिव्यक्ति में सहकारी हाऊसिंग सोसाइटी में चाहे शेयर खरीद कर अथवा उस में धन जमा कर बने सदस्य के रूप में सोसाइटी द्वारा उसको आबंधित आवासीय स्थान का अधिग्रहण तथा किसी हाऊसिंग बोर्ड, नगर विकास न्यास या उस समय लागू किसी कानून के अन्तर्गत निर्मित अथवा स्थापित ऐसे किसी प्राधिकरण से किराया खरीद आधार पर या अन्यथा आवासीय मकान या परिसर की खरीद शामिल है तथा तदनुसार ऐसे अधिग्रहण अथवा खरीद हेतु अग्रिम पर उप-विनियम (2) के खण्ड (ग), (घ), (ङ) (i), (ङ) (ii), (झ) और (ञ) लागू होंगे।

(4) जब धन उप-विनियम (3) के साथ पठित उप-विनियम (2) के अधीन मंजूर किया जाये तो निम्नलिखित शर्तें भी लागू होंगी :—

(क) अभिदाता से निगम को आवश्यक करने को कहा जा सकता है कि उसने सहकारी हाऊसिंग सोसाइटी के शेयरों का हक प्राप्त कर लिया है अथवा सोसाइटी में धन जमा करने का प्रमाण अथवा किराया खरीद आधार पर हाऊसिंग बोर्ड, नगर विकास न्यास अथवा सामयिक कानून के अधीन निर्मित अथवा स्थापित अन्य प्राधिकरण से खरीदे गये आवासीय मकान अथवा परिसर की प्राप्ति का अधिकार प्राप्त कर लिया है।

(ख) अभिदाता पूरी राशि अथवा उसका कुछ भाग निकालने के छः मास के भीतर अथवा ऐसी अवधि के भीतर, जो निगम निर्धारित करे, आवासीय स्थान प्राप्त कर लेगा।

(ग) राशि किस्मों में, जो चार से ज्यादा नहीं होगी, ऐसी अवधि अथवा अवधियों पर, जो निगम निश्चित करे, दी जायेगी।

(घ) इन विनियमों के अधीन निकाले गए धन की सहायता से, अभिदाता द्वारा अधिगृहीत किए गए मकान में, उसके द्वारा परिवर्तन, समनुदेशन या किसी अन्य हित के सृजन किए जाने के मामले में, अभिदाता को ऐसे परिवर्तन, समनुदेशन या हित सृजन करने, जैसा भी मामला हो, के तत्काल बाद उसके द्वारा निकाला गया साग धन वापिस लौटाना होगा।

परन्तु जहां ऐसा परिवर्तन, समनुदेशन या हित सृजन निगम की अनुमति से किया गया है, और अभिदाता ने उसके द्वारा लिया गया धन निगम को लौटा दिया है तो

वह निधि से दोबारा धन निकालने का पात्र होगा, वरन् यह इन विनियमों के अन्य प्रावधानों के अनुसार हो।

14क. धन निकालने की सीमाएं तथा शर्तें

अभिदाता द्वारा विनियम 14 के उप-विनियम (2) के खण्ड (क) के अनुसार किसी समय एक अथवा अधिक उद्देश्यों के लिये ली गई रकम, उसके खाते में व्याज सहित जमा अभिदान अथवा छः मास का वेतन (वेतन विनियम 8 के स्पष्टीकरण में वर्णित) जो भी कम हो, से ज्यादा नहीं होगी। (i) धन निकालने का उद्देश्य, (ii) अभिदाता की हैसियत, (iii) अभिदाता का अभिदान तथा उस पर व्याज को ध्यान में रखते हुए, मंजूरी देने वाला अधिकारी इस सीमा से अधिक, अभिदाता का व्याज सहित जमा के 3/4 भाग तक धन निकालने की स्वीकृति दे सकता है।

(2) विनियम 14 के उप-विनियम (2) के खण्ड (ख) के अधीन [सिवाय उस खंड के उपखण्ड (iv), के] यह राशि अभिदाता के अभिदान तथा उस पर व्याज से ज्यादा नहीं होगी।

परन्तु यदि पति और पत्नी दोनों निगम के कर्मचारी हैं और निधि में अभिदान करते हैं और एक दूसरे के नामित हैं, तो उनमें से किसी के भी नाम पर एक मकान अधिगृहीत करने के लिए अग्रिम और दोनों द्वारा निकाला गया धन उस राशि से अधिक नहीं होगा जो समय-समय पर निगम द्वारा विनिर्दिष्ट एक एकल अभिदाना को उपलब्ध होता है।

(3) जिस अभिदाता को विनियम 14 के उप-विनियम (2) के अधीन निधि से धन निकालने की अनुमति प्रदान की गई है उसे निगम द्वारा निर्धारित निश्चित अवधि के भीतर, निगम को आवश्यक करना होगा कि इस प्रकार ली गई राशि, वास्तविक उद्देश्य पर खर्च की गई है, और अगर ऐसा नहीं किया गया तो ली गई सारी राशि, जो वास्तविक उद्देश्य पर खर्च नहीं की गयी, विनियम 9 के अधीन निर्धारित व्याज सहित एक मुश्त वापिस कर दी जायेगी। इस अदायगी के न कर सकने पर निगम उक्त राशि को उसकी प्रल्लिखियों में से एक मुश्त अथवा निर्धारित किस्मों में काटने का आदेश देगा, जैसा कि निगम द्वारा निर्धारित किया जाए।

14ख. अग्रिम का निकाली में परिवर्तन

विनियम 11 अथवा 11क में उल्लिखित उद्देश्यों के लिए अग्रिम प्राप्त करने वाले अभिदाता को निगम द्वारा उक्त अग्रिम के बकाया शेष को, विनियम 14 के अधीन उसमें उल्लिखित संबंधित शर्तों को पूरा करने से आवश्यक होने पर, निकाली में परिवर्तित करने की अनुमति दी जा सकती है।

14ग. मंजूरी प्राधिकारी तथा शक्तियों का प्रत्ययोजन

(1) प्रशासक ऐसी शक्तों के अधीन, जैसा वे उचित समझें विनियम 4 और विनियम 5 (iii) (ख) के परन्तुक तथा विनियम 5क के अधिकारों को छोड़कर, निगम के किसी अधिकारी को अपनी ओर से सभी अथवा कुछ अधिकार दे सकते हैं।

(2) उप-विनियम (1) की शक्तों पर दुष्प्रभाव डाले बिना—

(क) विनियम 11 अथवा विनियम 11-क के अधीन, अभिदाता के छः मास के वेतन अथवा अभिदाता के स्वयं के अभिदान और उस पर ब्याज की आधी राशि, जो भी अधिक हो, तक का अग्रिम सभी मामलों में प्रबन्धक (प्रशासन)/प्रबन्धक (स्थापना एवं लेखा) द्वारा तथा निधि से इन सीमाओं से अधिक अग्रिम महाप्रबन्धक/उप महाप्रबन्धक/सहायक महाप्रबन्धक/मुख्य लेखापाल द्वारा मंजूर किए जा सकते हैं।

(ख) विनियम 14 के उप-विनियम (i) के प्रथम परन्तुक के अधीन आहरण, अधिकारियों के मामले में महाप्रबन्धक/उप महाप्रबन्धक/सहायक महाप्रबन्धक/मुख्य लेखापाल द्वारा यथा अन्य सभी मामलों में प्रबन्धक (प्रशासन)/प्रबन्धक (स्थापना एवं लेखा) द्वारा मंजूर किए जा सकते हैं।

(ग) विनियम 14 के उप-विनियम (i) के दूसरे परन्तुक के अधीन, अभिदाता के छः मास के वेतन अथवा अभिदाता के स्वयं के अभिदान और उस पर ब्याज की आधी राशि, जो भी अधिक हो, तक के आहरण सभी मामलों में प्रबन्धक (प्रशासन)/प्रबन्धक (स्थापना एवं लेखा) द्वारा तथा इस विनियम के अधीन इन सीमाओं से अधिक आहरण महाप्रबन्धक/उप महाप्रबन्धक/सहायक महाप्रबन्धक/मुख्य लेखापाल द्वारा मंजूर किए जा सकते हैं।

टिप्पणी : इस विनियम के प्रयोजन के लिए (क) महाप्रबन्धक में उप महाप्रबन्धक और प्रबन्धक निहित है।

15. नामांकन

(1) प्रत्येक अभिदाता निधि का सदस्य बनते ही निगम के प्रधान कार्यालय को अपनी मृत्यु की दशा में जो राशि देय हो गई अथवा हो जायेगी, परन्तु अदा नहीं की गई, को प्राप्त करने का एक अथवा अधिक व्यक्तियों को अधिकार प्रदत्त करते हुए, नामांकन भेजेगा :

परन्तु यह कि यदि नामांकन देते समय अभिदाता का परिवार है तो नामांकन परिवार के सदस्यों से अन्य व्यक्ति अथवा व्यक्तियों के पक्ष में नहीं हो सकता :

परन्तु आगे यह कि जब अभिदाता इस निधि में अभिदान करने से पहले किसी अन्य निधि में अभिदान कर रहा था और यह जमा राशि उसके इस निधि खाने में परिवर्तित हो गई है, तो जब तक अभिदाता इन विनियमों के अनुसार नामांकन न दे तो पहले का दिया हुआ नामांकन, इन विनियमों के अधीन दिया हुआ नामांकन ही माना जाता रहेगा।

(2) यदि अभिदाता उप-विनियम (1) के अधीन एक से अधिक व्यक्तियों को नामित करता है, तो वह नामांकन में प्रत्येक नामित को देय राशि का भाग इस प्रकार निर्दिष्ट कर देगा, जो उसकी निधि में किसी समय जमा कुल राशि को समाहित कर लें।

(3) जैसा भी जिस दशा में उचित हो, प्रत्येक नामांकन इन विनियमों के परिशिष्ट में दिये गये प्रपत्रों में से एक प्रपत्र में भरा जायेगा।

(4) अभिदाता किसी भी समय निगम के प्रधान कार्यालय को लिखित रूप में सूचना भेज कर अपना नामांकन रद्द करा सकता है।

परन्तु यह कि अभिदाता इस विनियम की व्यवधानुसार ऐसी सूचना के साथ नया नामांकन भेजेगा।

(5) अभिदाता नामांकन में उल्लेख कर सकता है—

(क) विशिष्ट नामित के सम्बन्ध में जिसकी मृत्यु अभिदाता से पहले हो जाती है, उसका नामित अधिकार ऐसे व्यक्ति अथवा व्यक्तियों को परिवर्तित हो जायेगा जैसा नामांकन में उल्लिखित हो, परन्तु यह कि यदि अभिदाता का परिवार है, तो वह व्यक्ति परिवार के सदस्य अथवा सदस्यों में से होगा, जहाँ इस खण्ड के अधीन अभिदाता एक से अधिक व्यक्तियों को प्राधिकृत करे तो वह प्रत्येक नामित को देय राशि का भाग, इस प्रकार निर्दिष्ट करेगा, जिसमें नामित को देय पारी राशि समाहित हो जाये :

(ख) कि उस में निनिर्दिष्ट आकस्मिकता के घटित होने पर नामांकन अविधिमान्य हो जायेगा :

परन्तु यह कि नामांकन के समय अभिदाता का कोई परिवार नहीं है, तो वह उल्लेख कर सकता है कि उसका परिवार होते ही नामांकन अविधिमान्य हो जायेगा।

परन्तु आगे यह कि नामांकन के समय अभिदाता के परिवार में एक ही सदस्य है, तो वह नामांकन में व्यवस्था कर देगा कि तदनुसार खण्ड (क) के अधीन उसके परिवार में सदस्य अथवा सदस्यों के होने से नामांकन अविधिमान्य हो जायेगा।

(6) उप-विनियम (5) के खण्ड (क) के अधीन नामित की मृत्यु के तुरन्त बाद जिसके बारे में नामांकन में विशेष व्यवस्था नहीं है अथवा उप-विनियम (5) के खण्ड (ख) अथवा उसके परन्तुकों के अनुसार किसी कारण

से नामांकन अविधिमान्य हो जाये, तो अभिदाता पहले नामांकन को लिखित रूप में रद्द कर, इस विनियम की व्यवस्था-नुसार नया नामांकन निगम के प्रधान कार्यालय को भेजेगा।

(7) अभिदाता द्वारा दिया गया प्रत्येक नामांकन अथवा रद्द करने की सूचना यदि विधिमान्य हो, तो उसे प्रधान कार्यालय में प्राप्त होने वाले दिन से लागू मान लिया जायेगा।

स्पष्टीकरण—

इस विनियम और विनियम 16 में “परिवार” का अर्थ है, अभिदाता की पत्नी या पत्नियां या पति, और बच्चे तथा विधवा या विधवाएं और अभिदाता के मृत पुत्र के बच्चे :

परन्तु यह कि यदि अभिदाता यह सिद्ध कर दे कि उसकी पत्नी कानूनी तौर पर उससे अलग हो चुकी है अथवा वह उसके समुदाय में प्रचलित रीति रिवाज के अनुसार विवाह के अधिकार से वंचित हो गई है, तो वह परिवार का सदस्य नहीं रहेगी, जब तक पुनः अभिदाता प्रशासकों को लिखित रूप में अधिमूर्चित नहीं कर देता कि उसे ऐसा ही माना जाता रहे :

परन्तु आगे यह कि यदि अभिदाता प्रशासकों को लिखित अधिसूचना द्वारा अपने पति को परिवार से वंचित कर दें, तो वह परिवार का सदस्य नहीं माना जायेगा, जब तक कि अभिदाता पुनः वंचित करने वाली अधिसूचना को लिखित रूप में रद्द न कर दें :

परन्तु आगे यह कि ऐसे मामलों में अहां अभिदाता के वैयक्तिक कानून अनुसार दत्तकग्रहण स्वीकार्य हो, तो दत्तक बालक उसका अपना बालक माना जायेगा।

स्पष्टीकरण—II

इस विनियम के लिए “व्यक्ति” में केन्द्रीय सरकार, स्थानीय प्राधिकारी, कम्पनी अथवा समिति अथवा व्यक्तियों का समूह, निगमित अथवा अनिगमित अथवा अधिकार से अभिहित कोई व्यक्ति, शामिल है।

15क. कुछ मामलों में आश्रितों के पक्ष में नामांकन

विनियम 15 पर विपरीत प्रभाव डाले बिना, अभिदाता किसी को नामित कर सकता है, जो भविष्य निधि अधिनियम 1925 की परिभाषा के अनुसार आश्रित है। यदि निगम आवश्यक है कि इन विनियमों के अनुसार नामांकन करने अथवा नामांकन के कायम होने से परिवार पर अनुचित बोझ पड़ेगा अथवा जो न्याय संगत तथा उचित नहीं होगा, तो ऐसा नामांकन इन विनियमों के परिशिष्ट में दिये गये प्रपत्र (आई० एफ० सी० पी० एफ० 7) में भरा जाये।

16. अभिदाता की मृत्यु होने पर अदायगी

अभिदाता की मृत्यु होने पर :—

(i) जब अभिदाता परिवार छोड़ जाता है—

(क) यदि अभिदाता का इन विनियमों के अनुसार अपने परिवार के एक सदस्य अथवा सदस्यों के नाम दिया गया नामांकन कायम है, तो उसके

निधि खाते में जमा राशि अथवा उसका भाग जिसका नामांकन में उल्लेख है, नामित अथवा नामितों को नामांकन में उल्लिखित अनुपात के अनुसा देय हो जायेगी।

(ख) यदि अभिदाता का नामांकन परिवार के सदस्य अथवा सदस्यों के नाम कायम नहीं रहता अथवा नामांकन में खाते में जमा राशि के कुछ भाग का उल्लेख है, तो पूरी राशि अथवा उसका कुछ भाग, जिसका नामांकन में उल्लेख नहीं है, जैसा भी मामला हो, तो नामांकन परिवार से भिन्न सदस्य अथवा सदस्यों के नाम होने के बावजूद भी राशि परिवार के सदस्यों को बराबर भागों में देय होगी :

परन्तु यह कि निम्नलिखित को कोई भाग देय नहीं होगा; :

(i) जिन पुत्रों ने वैधिक वयस्कता प्राप्त कर ली है;

[(ii) मृत पुत्र के जिन पुत्रों ने वैधिक वयस्कता प्राप्त कर ली है;

(iii) जिन विवाहित पुत्रियों के पति जीवित हैं;

(iv) मृत पुत्र की जिन विवाहित पुत्रियों के पति जीवित हैं;

यदि परिवार का कोई अन्य सदस्य है जिसका उल्लेख खण्ड (i), (ii), (iii) और (iv) में नहीं है :

परन्तु आगे यह कि मृत पुत्र की विधवा अथवा विधवाओं और बच्चा अथवा बच्चों को वही भाग बराबर भागों में मिलेगा, जो उस पुत्र को मिलता यदि वह जीवित होता और यदि वह जीवित होते हुए भी पहले परन्तुक के खण्ड (i) के अनुसार अपने भाग से वंचित हो जाता, इस प्रकार वंचित नहीं हुआ :

परन्तु आगे यह कि यदि विनियम 15क के अनुसार नामांकन आश्रित अथवा आश्रितों के पक्ष में कायम है, तो अभिदाता के लेखे में जमा रकम अथवा नामांकन में उल्लिखित कुछ भाग, इस उपखण्ड पर विपरीत प्रभाव डाले बिना नामांकन में उल्लिखित अनुपात में नामित अथवा नामितों को देय हो जायेगी।

(ii) जब अभिदाता कोई परिवार नहीं छोड़ता—

(क) यदि अभिदाता इन विनियमों के अधीन किसी व्यक्ति अथवा व्यक्तियों के नाम नामांकन करता है, तो उस पर आश्रित है अथवा हैं, और जो भविष्य निधि अधिनियम, 1925 की धारा (2) के खण्ड (ग) की परिभाषा के अनुसार कायम है, तो निधि में उसकी जमा राशि अथवा उसका कुछ भाग, जैसा भी मामला हो, नामांकन में उल्लिखित अनुपात के अनुसार नामित अथवा नामितों को देय हो जायेगी।

(ख) यदि भविष्य निधि अधिनियम, 1925 की धारा (2) के खण्ड (ग) की परिभाषा के अनुसार नामांकन ऐसे व्यक्ति के सम्बन्ध में कायम है, जो आश्रित नहीं है तो निधि में उसकी जमा राशि अथवा जैसा भी मामला हो, उसका कुछ भाग जो नामांकन में वर्णित है, यदि यह राशि पाँच हजार रुपये से ज्यादा नहीं है, तो ऐसे नामित को देय हो जायेगी।

(ग) यदि नामांकन कायम नहीं है अथवा नामांकन में निधि में जमा कुछ भाग का उल्लेख है अथवा जैसा भी मामला हो और वह भाग जिसका नामांकन में उल्लेख नहीं है, तो वह राशि अथवा उसका कुछ भाग, जैसा भी मामला हो, यदि वह राशि पाँच हजार रुपये से ज्यादा न हो, तो ऐसे व्यक्ति को देय होगी, जो प्रशासकों को उसका हकदार लगेगा।

(घ) उप-खण्ड (क) अथवा (ख) अथवा (ग) के अधीन कुछ भाग जो किसी को भी देय नहीं है, तो ऐसे व्यक्ति को जो भविष्य निधि अधिनियम, 1925 की धारा 4 के खण्ड (ग) के अनुसार, वसीयतनामा अथवा मृतक की सम्पत्ति मिलने के अधिकार का प्रमाणपत्र अथवा उत्तराधिकार प्रमाणपत्र प्रस्तुत करेगा, को देय हो जायेगी।

आई० एफ० सी० पी० एफ०-1

करार प्रपत्र

सेवा में,

प्रशासक,
भारतीय औद्योगिक वित्त निगम
कर्मचारी भविष्य निधि

महोदय,

मैं घोषित करता हूँ कि मैंने भारतीय औद्योगिक वित्त निगम कर्मचारी भविष्य निधि विनियमों को पढ़ और समझ लिया है और मैं इन विनियमों के अधीन अभिमान करने और उनसे बाध्य होने के लिए सहमत हूँ।

टिप्पणी :

भविष्य निधि अधिनियम, 1925 की धारा 2 के खण्ड (ग) की परिभाषा अनुसार जब नामित अथवा अन्य व्यक्ति अभिदाता पर आश्रित है, तो इन विनियमों के अधीन नामित अथवा अन्य व्यक्ति को देय राशि का अधिकार, उक्त अधिनियम की धारा 3 की उपधारा (2) के अधीन आश्रित में निहित होगा।

17. अभिदाताओं द्वारा किया जाने वाला करार

प्रत्येक कर्मचारी को निधि का अभिदाता बनने से पूर्व निम्नलिखित प्रपत्र में एक करार करना होगा :—

मैं एतद्वारा घोषित करता हूँ कि मैंने भारतीय औद्योगिक वित्त निगम कर्मचारी भविष्य निधि विनियमों को पढ़ और समझ लिया है और मैं एतद्वारा उक्त निधि में अभिदान करने को सहमत हूँ तथा मैं एतद्वारा उक्त विनियमों द्वारा बाध्य होने के लिए सहमत हूँ।

पूरे हस्ताक्षर —————

दिनांक —————

पता —————

साक्षी —————

स्थान —————

तिथि —————

पूरा नाम —————

जन्म तिथि —————

नियुक्ति की प्रकृति —————

मासिक वेतन —————

भवदीय,
(हस्ताक्षर)

सूचकांक —————

साक्षी :

हस्ताक्षर —————

पदनाम —————

पता —————

—————

—————

आई० एफ० सी० पी० एफ०-2

नामांकन प्रपत्र

I (यदि अभिदाता का परिवार हो और वह उसके सदस्य को नामित करना चाहता हो)

सेवा में,

प्रशासक,

भारतीय औद्योगिक वित्त निगम

कर्मचारी भविष्य निधि ।

महोदय,

मैं भारतीय औद्योगिक वित्त निगम कर्मचारी भविष्य निधि विनियमों के विनियम 15 की परिभाषा के अनुसार अपने परिवार के निम्नलिखित सदस्य को, मेरी मृत्यु की दशा में, जो राशि मेरे निधि खाते में जमा होगी और देय हो गई है अथवा हो जायेगी, परन्तु अदा नहीं हुई, को प्राप्त करने के लिए, नामित करता हूँ :-

नामित का नाम और पता	अभिदाता से संबंध	आयु	आकस्मिकतायें जिसमें नामांकन अधिविधान्य हो जाएगा	किसी ऐसे व्यक्ति का नाम, पता और संबंध जिसको अभिदाता द्वारा नामित के पूर्व देहांत से अधिकार परिवर्तित हो जाएगा
---------------------------	---------------------	-----	---	---

स्थान -----

दिनांक -----

दो साक्षियों के हस्ताक्षर

1. नाम -----

अभिदाता के हस्ताक्षर

पता -----

2. नाम -----

मैंने अभिदाता के हस्ताक्षर सत्यापित किए

पता -----

प्रबन्धक

आई० एफ० सी० पी० एफ०-3

नामांकन प्रपत्र

II (यदि अभिदाता का परिवार है और वह उसके एक से अधिक सदस्यों को नामित करना चाहता है)

सेवा में,

प्रशासक,

भारतीय औद्योगिक वित्त निगम

कर्मचारी भविष्य निधि ।

महोदय,

मैं भारतीय औद्योगिक वित्त निगम कर्मचारी भविष्य निधि विनियमों के विनियम 15 की परिभाषा के अनुसार अपने परिवार के निम्नलिखित सदस्यों को, मेरी मृत्यु की दशा में जो राशि मेरे निधि खाते में जमा होगी और देय हो गई है अथवा

हो जाएगी, परन्तु अदा नहीं हुई को प्राप्त करने के लिए नामित करता हूँ और इस राशि को प्रत्येक के नाम के सामने उल्लिखित अनुसार विभाजित करने का निदेश देता हूँ :-

नामितों के नाम और पता	अभिदाता से संबंध आयु	*कुल जमा राशि में से प्रत्येक को देयभाग	आकस्मिकताएँ जिनसे नामांकन अधिधिमाम्य हो जाएगा	किसी ऐसे व्यक्ति का नाम, पता और संबंध जिसको अभिदाता द्वारा नामित के पूर्व देहान्त से अधिकार परिवर्तित हो जाएगा
-----------------------	----------------------	---	---	--

स्थान -----

दिनांक -----

दो साक्षियों के हस्ताक्षर

1. नाम -----

पता -----

अभिदाता के हस्ताक्षर

2. नाम -----

पता -----

मैंने अभिदाता के हस्ताक्षर सत्यापित किये
प्रबन्धक

*टिप्पणी—यह खाना इस प्रकार भरा जाए, जिससे अभिदाता के खाने में किसी समय जमा सारी राशि, समाहित हो जाए।

आई० एफ० सी० पी० एफ०-4

नामांकन प्रपत्र

III (यदि अभिदाता का कोई परिवार नहीं है, और वह एक व्यक्ति को नामित करना चाहता है)

सेवा में,

प्रशासक,

भारतीय औद्योगिक वित्त निगम

कर्मचारी भविष्य निधि ।

महोदय,

भारतीय औद्योगिक वित्त निगम कर्मचारी भविष्य निधि विनियमों के विनियम 15 की परिभाषा के अनुसार मेरा कोई परिवार नहीं है, मैं, निम्नलिखित व्यक्ति को मेरी मृत्यु की दशा में जो राशि मेरे निधि खाने में जमा होगी और देय हो गई है अथवा हो जाएगी, परन्तु अदा नहीं हुई, को प्राप्त करने के लिए नामित करता हूँ:-

नामित का नाम और पता	अभिदाता से सम्बन्ध आयु	*आकस्मिकताएँ जिनसे नामांकन अधिधिमाम्य हो जायेगा	किसी ऐसे व्यक्ति का नाम, पता और संबंध जिसको अभिदाता द्वारा नामित के पूर्व देहान्त से अधिकार परिवर्तित हो जाएगा
---------------------	------------------------	---	--

स्थान -----

दिनांक -----

दो साक्षियों के हस्ताक्षर

1. नाम -----

पता -----

अभिदाता के हस्ताक्षर

2. नाम -----

पता -----

मैंने अभिदाता के हस्ताक्षर सत्यापित किए
प्रबन्धक

*टिप्पणी—जिस अभिदाता का परिवार नहीं है, नामांकन देते समय वह नामांकन में उल्लेख कर देगा कि उसका परिवार होने से नामांकन अधिधिमाम्य हो जाएगा ।

आई० एफ० सी० पी० एफ०-5

नामांकन प्रपत्र

IV (यदि अभिदाता का कोई परिवार नहीं है, और वह एक से अधिक व्यक्तियों को नामित करना चाहता है)

सेवा में,

प्रशासक,

भारतीय औद्योगिक वित्त निगम

कर्मचारी भविष्य निधि ।

महोदय,

भारतीय औद्योगिक वित्त निगम कर्मचारी भविष्य निधि विनियमों के विनियम 15 की परिभाषा के अनुसार मेरा कोई परिवार नहीं है, मैं निम्नलिखित व्यक्तियों को मेरी मृत्यु की विषया में जो राशि मेरे निधि खाते में जमा होगी और देय हो गई है अथवा हो जाएगी, परन्तु अदा नहीं हुई, को प्राप्त करने के लिए नामित करता हूँ :-

नामितों के नाम	अभिदाता से	*कुल जमा राशि में	**आकस्मिकतायें जिनसे किसी ऐसे व्यक्ति का नाम, पता
और पता	संबंध	आयु	से प्रत्येक को देय भाग नामांकन अविधिमान्य और संबंध जिसको अभिदाता द्वारा
			हो जाएगा नामित के पूर्व देहांत से अधिकार
			परिवर्तित हो जाएगा

स्थान—

दिनांक—

दो साक्षियों के हस्ताक्षर

1. नाम—

पता—

अभिदाता के हस्ताक्षर

2. नाम—

पता—

मैंने अभिदाता के हस्ताक्षर सत्यापित किए
प्रबंधक

*टिप्पणी—यह खाना इस प्रकार भरा जाये, जिससे अभिदाता के खाते में किसी समय जमा सारी राशि समाहित हो जाए ।

**टिप्पणी—जिस अभिदाता का परिवार नहीं है नामांकन देते समय वह नामांकन में उल्लेख कर देगा कि उसका परिवार होने से नामांकन अविधिमान्य हो जाएगा ।

आई० एफ० सी० पी० एफ०-6

(अभिवान की वर निश्चित करने के लिए प्रार्थना पत्र)

स्थान

दिनांक

प्रबंधक,

भारतीय औद्योगिक वित्त निगम,

महोदय,

मैं एतद्वारा भारतीय औद्योगिक वित्त निगम कर्मचारी भविष्य निधि विनियमों के विनियम 6 के अधीन अपने मासिक वेतन में से—प्रतिशत वेतन भविष्य निधि में अपने अभिदान के रूप में काटने का निदेश देता हूँ ।

भवदीय,

पदनाम

सूचकांक

हस्ताक्षर

आई० एफ० सी० पी० एफ-7

नामांकन प्रपत्र

V (यदि अभिवाता का परिवार है, परन्तु वह विनियम 15क की शर्तों के अधीन आश्रित/आश्रितों को नामित करने का इच्छुक है)

सेवा में,

प्रशासक,

भारतीय औद्योगिक वित्त निगम

कर्मचारी भविष्य निधि ।

महोदय,

मैं भारतीय औद्योगिक वित्त निगम कर्मचारी भविष्य निधि विनियम 15क की शर्तों के अनुसार निम्नलिखित आश्रितों को, मेरी मृत्यु की वशा में, जो राशि मेरे निधि खाते में जमा होगी और देय हो गई है अथवा हो जायेगी, परन्तु अदा नहीं हुई, को प्रत्येक के नाम के सामने उल्लिखित अनुसार अदा करने का निवेश देता हूँ :

नामित अथवा नामितों के नाम और पता	अभिवाता से सम्बन्ध	नामित अथवा नामितों की आयु	*कुल जमा राशि में से प्रत्येक को देय भाग	परिवार होते हुए भी आश्रित को नामित करने के कारण	किसी ऐसे व्यक्ति का नाम, पता और सम्बन्ध जिसको अभिवाता द्वारा नामित के पूर्व बेहान्त से अधिकार परिवर्तित हो जायेगा ।
---	--------------------------	------------------------------------	---	--	---

स्थान _____

दिनांक _____

दो साक्षियों के हस्ताक्षर

1. नाम _____

पता _____

2. नाम _____

पता _____

अभिवाता के हस्ताक्षर

मैंने अभिवाता के हस्ताक्षर सत्यापित किये
प्रबन्धक

*टिप्पणी—यह खाता इस प्रकार भरा जाये जिससे अभिवाता के खाते में किसी समय जमा सारी राशि समाहित हो जायें ।

RESERVE BANK OF INDIA
(DEPARTMENT OF GOVERNMENT AND BANK
ACCOUNTS)

CENTRAL OFFICE

Bombay, the 26th December 1988

*Amendment to Reserve Bank of India General Regulations,
1949—Regulation 22—Changes in the format of Profit and
Loss Account of the Bank*

In pursuance of sub-section 2(m) of Section 58 of the Reserve Bank of India Act, 1934 the Central Board of the Reserve Bank of India, with the previous sanction of the Central Government, hereby directs that the following amendments shall be made to sub-regulations (ii) and (iii) of Regulation 22 of the Reserve Bank of India General Regulations, 1949 namely :

- (1) In Sub-regulation (ii) of Regulation 22 the existing items under heading "Expenditure" shall be substituted by the following :

Expenditure

"Interest
Establishment
Directors' and Local Board Members' Fee and Expenses

Remittance of Treasure
Agency Charges
Security Printing (Cheque, Note Forms, etc.)
Printing and Stationery
Postage and Telecommunication Charges
Rent, Taxes, Insurance, Lighting, etc.
Auditors' Fees and Expenses
Law Charges
Depreciation, and Repairs to Bank Property
Miscellaneous Expenses

Total : _____

Available Balance

Less : Contributions to :

NIC (LTO) Fund
NRC (LTO) Fund
NRC (Stabilisation) Fund
Others (Specify major items) _____
Surplus payable to
Central Government _____

(II) Sub-regulation (iii) of Regulation 22 shall be deleted.

(III) The amendments shall be effective from 20th May, 1988.

R. JANAKIRAMAN
Executive Director

STATE BANK OF INDORE

HEAD OFFICE

Indore, the 29th March 1989

NOTICE is hereby given that the Register of Shareholders of the State Bank of Indore will remain closed for transfer of shares from Monday the 22nd May, 1989 to Monday the 19th June 1989 (both days inclusive).

By Order of the Board of Directors

M. K. SINHA
Managing Director

THE INSTITUTE OF CHARTERED ACCOUNTANTS OF INDIA

New Delhi-110 002, the 30th March 1989

(CHARTERED ACCOUNTANTS)

No. 3NCA(8)/8/88-89.—In pursuance of Regulation 10(1) (iii) of the Chartered Accountants Regulations, 1988, it is hereby notified that the Certificate of Practice issued to the following members has been cancelled from the dates mentioned against their names as they do not desire to hold the same.

Sl. No.	Member-ship No.	Name and Address	Date of Cancellation
1.	84873	Shri Prem Prakash Gandhi, ACA Chartered Accountant, D/157, Prashant Vihar, New Delhi-110 042.	1-8-87
2.	85283	Miss Geeta Sabharwal, ACA B-10/1, Krishan Nagar, Delhi-110 051.	12-5-88
3.	85833	Shri Shiv Kumar, ACA C/o Shri Ishwar Dutt Sharma, Jheel Street, Gandhi Chowk, Bahadurgarh, District Rohtak, Haryana.	10-3-88
4.	86311	Shri Rajeev Chadha, ACA Accounts Officer, H. M. T. Limited, Machine Tools Division, Pinjore-134 101.	19-5-88

No. 3NCA(8)/9/88-89.—In pursuance of Regulation 10(1) (iii) of the Chartered Accountants Regulations, 1988, it is hereby notified that the Certificate of Practice issued to the following members has been cancelled from the dates mentioned against their names as they do not desire to hold the same.

Sl. No.	Member-ship No.	Name and Address	Date of Cancellation
1		Shri Kameshwar Nath Mathur, ACA, C/27, Preet Vihar, Delhi-110 092.	1-4-88
2.	80028	Shri Sudhir Kumar Kapoor, FCA, 16/8, Old Rajendra Nagar, New Delhi-110 060.	1-8-87

1	2	3	4
3.	80891	Shri Anil Kumar Jain, FCA House No. 5791, Basti Harphool Singh, Sadar Thana Road, Delhi-110 006.	1-4-88
4.	81025	Shri P. J. L. Sondhi, FCA 1060, Rembrandt, Brossard, Que J4X 1Y6, Canada.	1-4-88
5.	84061	Shri Rakesh Kumar Sethi, ACA E-29/B, Vijay Nagar, Delhi-110 009.	1-4-88
6.	84791	Shri Rajesh Kumar, ACA House No. 4/82, Model Colony, Yamuna Nagar-135 001.	5-9-88
7.	84965	Shri Suresh Kumar, ACA K-4/563, Paschim Vihar, New Delhi-110063.	1-4-88
8.	87335	Shri Krishad Kumar Bector, ACA Chartered Accountant, Deepak Hospital, Sarabha Nagar, Ludhiana.	5-10-88

No. 3NCA(8)/10/88-89.—In pursuance of Clause (iv) of Regulation 10(1) read with Regulation 10(2) (b) of the Chartered Accountants Regulations, 1988, it is hereby notified that the Certificate of Practice issued to the following member shall stand cancelled with effect from the date mentioned against his name as he had not paid his certificate of practice fee.

Sl. No.	Member-ship No.	Name and Address	Date of Cancellation.
1.	85268	Shri Pavan Bhalla, ACA 36, Chander Lok Enclave, Pitam Pura, Delhi-110 034.	1-8-87

No. 3NCA(8)/11/88-89.—In pursuance of Regulation 10(1) (iii) of the Chartered Accountants Regulations, 1988, it is hereby notified that the Certificate of Practice issued to the following members has been cancelled from the dates mentioned against their names as they do not desire to hold the same.

Sl. No.	Member-ship No.	Name and Address	Date of Cancellation.
1.	3149	Shri Ashwani Kumar Gupta, FCA 107, Marcus Avenue, New Hyde Park, New York-11040 U.S.A.	1-4-87
2.	7842	Shri Pradeep Bhalla, ACA M/s. Gostza (India) Limited, H-2, Connaught Circus, New Delhi-110 001.	1-4-88
3.	14195	Shri Ajit Mal Surama, FCA General Manager (Accounts), M/s. Mody Cement Limited, 32, Community Centre, New Delhi-110 065.	29-3-88

1	2	3	4
4.	81768	Shri Rajesh Kumar Mangal, FCA M/s. Kant Kumar & Co., 2582 Rohtagi Mansion Lothian Road Kashmere Gate Delhi-110006	10-10-88
5.	82213	Shri Raju Malhotra, ACA M/s. V. Gupta & Associates 30-31 Govind Colony Market Rajapura-140 401 (Punjab)	26-8-88
6.	82296	Shri Vinod Chander Ojha ACA A/10, Defence Colony New Delhi	1-4-88
7.	82734	Shri Ashok Kumar Soni ACA 28/13, Shakti Nagar Delhi-110 007	24-8-88
8.	83277	Shri Yoginder Singh Thakur ACA H. P. State Electronic Development Corporation Ltd. Salig Ram Bhawan, Khillni-Shimla.	16-8-86
9.	83806	Shri Raman Kumar Tondon, ACA, KD/32.C, Ashok Vihar, Phase-I, Delhi-110 052.	1-10-88
10.	83811	Shri Pradeep Kumar Goel, ACA, M/s. Ellahi Goel & Co., Chartered Accountants, 835, Abid Building, Ballimaran, Delhi-110 006.	1-9-88
11.	83978	Shri Ashwani Juneja, ACA 136, M.I. G. Flats Prasad Nagar, New Delhi - 110 005.	21-9-88
12.	84135	Shri Suresh Kumar, ACA A-1/150, Safdarjung Enclave, New Delhi-29.	16-9-88
13.	84736	Shri Sunil Kumar Puri, ACA Pocket B/55-B, Phase- Ashok Vihar, Delhi-52.	1-4-88
14.	84754	Shri R. Sriniwasan, ACA 120, Satya Niketan, New Delhi-21.	15-1-88
15.	85559	M/s. Manvinder Kaur Mamak, ACA, B/464, New Friends Colony, New Delhi-110 065.	1-9-88
16.	85940	Shri Param Tej Mittal, ACA 15/60, Punjabi Bagh, New Delhi-26.	1-4-88
17.	86051	Shri Pramod Kumar, ACA C/o F. & A. Wing, N.H.P.C. Tanakpur H.E. project, Post Office Banbassa, Distt. Nainital, Pin - 262310	1-4-88
18.	86384	Shri Ravinder Pal Sharma, ACA 48, E. S. I. Colony, New Delhi-15.	27-10-88
19.	86792	Shri Rakesh Jolly, ACA 116, Model Town, Ambala City (Haryana).	1-7-88

No. 3NCA(8)/12/88-89.—In pursuance of Regulation 10(1) (iii) of the Chartered Accountants Regulations, 1988, it is hereby notified that the Certificate of Practice issued to the following members has been cancelled from the dates mentioned against their names as they do not desire to hold the same.

Sl. No.	Member-ship No.	Name and Address	Date of Cancellation.
1.	3974	Shri Suresh Chander Sood, ACA, City Bank, N. A. Jeevan Bharati Building, Connaught Circus, New Delhi.	1-8-86
2.	50719	Shri Aspy D. Mehta, ACA 8/A, Atma Ram House, 1, Tolstoy Marg, New Delhi.	1-8-86
3.	81142	Shri Tarun Kumar Saxena, ACA M/s. Tarun Shankar & Associates E/186, Narain Vihar, New Delhi-28.	1-4-86
4.	82645	Shri V. Thirumalai, ACA M/s. Ernst & Whinney, P. O. Box, 140, Manama Bahrain.	1-4-87
5.	85044	Shri Nalin Khosla, ACA 18, Bazar Lane, Bengali Market, New Delhi-110 001.	1-4-87
6.	85798	Shri Sanjay Chhabra, ACA No. 5/E Block, Local Shopping Centre, Masjid Moth, New Delhi-110048.	10-8-88

No. 3NCA(8)/13/88-89.—In pursuance of Regulation 10(1) (iii) of the Chartered Accountants Regulations, 1988, it is hereby notified that the Certificate of Practice issued to the following members has been cancelled from the dates mentioned against their names as they do not desire to hold the same.

Sl. No.	Member-ship No.	Name & Address	Date of Cancellation
1.	3176	Shri Arjun Dev Malik, ACA A-22, NDSE, Part-II, New Delhi-49	30-11-88
2.	71978	Shri Nagendra Parakh, ACA, Dy. Manager Finance, Power Finance Corpn. Chanderlok, 36, Janpath, New Delhi.	1-10-88
3.	85519	Shri Sudhir Gupta, ACA— C/o Dr. Baldev Krishan, 1450, Washo Dr. Fremont CA, 94539 U.S.A.	25-11-88

M. C. NARASIMHAN
Secretary

Bombay-400 005, the 24th March 1989

No. 3WCA(4)/15/88-89.—In pursuance of Regulation 18 of the Chartered Accountants Regulations, 1988, it is hereby

notified that in exercise of the powers conferred by clause (a) of sub-section (1) of Section 20 of the Chartered Accountants Act, 1949, the Council of the Institute of Chartered Accountants of India, has removed from the Register of Members of this Institute on account of death, with effect from the date mentioned against their names, the names of the following gentlemen :—

Sr. No.	M. No.	Name & Address	Dates
1.	675	Shri Vithal B. Kirtane, FCA, 3, 'Parag', Madhu Park, Khar, Bombay-400 052	2-7-88
2.	3288	Shri D.R.J. Desai, FCA Desai & Co., 38, Police Court Lane, Behind Sadhna Rayon House, Bombay-400 001	24-1-88

No. 3WCA(4)/14/88-89.—In pursuance of Regulation 18 of the Chartered Accountants Regulations, 1988, it is hereby notified that in exercise of the powers conferred by clause (a) of sub-section (1) of Section 20 of the Chartered Accountants Act, 1949, the Council of the Institute of Chartered Accountants of India, has removed from the Register of Members of this Institute on account of death, with effect from the date mentioned against their names, the names of the following gentlemen :—

Sr. No.	M. No.	Name & Address	Date of Removal
1.	4093	Shri Shrish H. Shah, ACA Aashish, Near Paldi Bus Stand, Sarkhej Road, Ellisbridge, Ahmedabad- 380 007.	20-10-88
2.	5480	Shri Ranjit S. Patel, FCA 47, Hindu Colony, Navrangpura, Ahmedabad-380 009	20-10-88
3.	15952	Shri Shailesh G. Kapadia, FCA M/s Kapadia Associates, Chartered Accountants, 1001, Raheja Chambers, 213, Nariman Point, Bombay-400 021.	20-10-88
4.	30738	Shri Sharad Chandra B. Patel, FCA, G-80, Ratilal Park, Opp : Darpan Society, St. Xavier's High School Road, Ahmedabad- 380 014	20-10-88
5.	32735	Shri Bharat G. Hirani, ACA, M/s B. Hirani & Associates, 629, Linda Pole, Bala Hanuman, Khadia, Ahmedabad-380 001	20-10-88

The 27th March 1989

No. 3WCA(4)/16/88-89.—In pursuance of Regulation 18 of the Chartered Accountants Regulations, 1988, it is hereby notified that in exercise of the powers conferred by clause (a) of sub-section (1) of Section 20 of the Chartered Accountants Act, 1949, the Council of the Institute of Chartered Accountants of India, has removed from the Register of Members of this Institute on account of death, with effect from the date mentioned against their names, the names of the following gentlemen :—

Sr. No.	M. No.	Name & Address	Date of Removal
1.	1256	Shri K.R. Dandekar, Kolarkar & Dandekar, Chartered Accountants, East & West Building, 55, Bombay Samachar Marg, Bombay-400 023	24-8-88

1	2	3	4
2.	6089	Shri D.D. Rajadhyaksha, M/s M.J. Bhide & Co., Chartered Accountants, 3, Krishna Kunj, Thanawala Lane, Telpal Road, Vile Parle (East), Bombay-400 057.	5-10-88
3.	37209	Shri Sorab Jal Pardiwalla, M/s Sharp & Tannan, Chartered Accountants, Bank of Baroda Building, Bombay Samachar Marg, Bombay-400 023	10-2-89

The 31st March 1989

No. 3WCA(5)/18/88-89.—With reference to this Institute's Notification No. 3WCA(4)/11/87-88 dated 5-1-88, it is hereby notified in pursuance of Regulation 20 of the Chartered Accountants Regulations 198, that in exercise of the Powers conferred by Regulation 19 of the said Regulations, the Council of the Institute of Chartered accountants of India has restored to the Register of Members, with effect from the dates mentioned against their names, the names of the following gentlemen :

Sr. No.	M. No.	Name & Address	Date of Restoration
1.	35434	Shr. Subhash Chand Parakh, ACA Chartered House, Office No. 301, 3rd Floor, Nr. Queen Road Church, Marine Lines, Bombay-400 002	21-11-88
2.	36159	Shri D.N. Satl, ACA, Type B/1/2, R.C.F. Colony, Behind Sports Club, Chembur Bombay-3400 074.	1-3-89

M. C. NARASIMHAN
Secretary.

Calcutta-700 071, the 17th March 1989

No. 3ECA/5/11/88-89.—With reference to the Institute's Notification No. 3ECA/4/6/88-89 dated 24-2-89, it is hereby notified in pursuance of Regulation 20 of the Chartered Accountants Regulations 1988, that in exercise of the Powers conferred by Regulation 19 of the said Regulations, the Council of the Institute of Chartered accountants of India has restored to the Register of Members, with effect from the dates mentioned against their names, the names of the following gentlemen :

Sl. No.	Mem No.	Name & Address	Date of Restoration
1.	7504	Shr. Sudarshan Mukherjee, ACA 2, Ganesh Street, Madras -600 086.	1-10-88
2.	50971	Shri Naresh Kumar Jain, FCA M/s Naresh Jain & Co., 2B, Grant Lane, 1st Floor, R. No. 18-A, Calcutta-700012	1-10-88
3.	51388	Shri Rana Basu, ACA 27/1, S.N. Roy Road Calcutta-700 038.	1-10-88
4.	51663	Shri Subha Prasad Mookerjee, ACA, 259, Jodhpur Park, Calcutta -700 068.	1-10-88
5.	51721	Shri Sunil Baran Mahapatra, ACA, Churi Colliery, P.O. : Ray, Dt., Ranchi-829 209	1-10-88

M. C. NARASIMHAN,
Secretary.

Madras-600 034, the 31st March 1989

(Chartered Accountant)

No. 3SCA(8)/23/88-89.—In pursuance of Clause (iii) of Regulation 10(1) of the Chartered Accountants Regulations, 1988, it is hereby notified that the Certificate of Practice issued to the following members have been cancelled from the dates mentioned against their names as they do not desire to hold their certificate of practice :—

S. M. No. No.	Name & Address	Date
1	2	3
1. 15949	Mrs. K. Satoja, FCA, 54, Venkatnarayana Road, T. Nagar, Madras- 600 017	1-4-88
2. 20893	Shri S Madanlal Jain, FCA 12, Kalathi Pillai Street I Floor, Sokkarpet, Madras-600 079	18-3-89
3. 11013	Shri Lokosh Kalra, ACA, 720, Chinmaya Mission, Hospital Road Abova Andhra Bank, Indiranagar, Bangalore-560 038	1-4-88
4. 22490	Shri P.C. Premnath, ACA 8 Sathyan, oorthy Road, Cheptup, Madras-600 031.	7-3-89

No. 3SCA(5)/22/88-89.—With reference to this Institute's Notification Nos. 3SCA(4)/10/87-88 dated 29th January 1988 and 3WCA(4)/11/87-88 dated 5th January 1988, it is hereby notified in pursuance of Regulation 20 of the Chartered Accountants Regulations, 1988 that in exercise of the powers conferred by Regulation 19 of the said Regulations, the Council of the Institute of Chartered Accountants of India has restored to the Register of Members with effect from dates mentioned against their names, the names of the following gentlemen :

S. M. No. No.	Name & Address	Date of Restora- tion
1	2	3
1. 21689	Shri P.M. Joseph, ACA C/o Porfurmio Gandour Zajre, B.P. 11997, KINSHASA-1 Republic of Zaire.	1-3-89
2. 32013	Shri Shabbir Yusoofaji Makda, FCA, Chartered Accountant, 276/36A Cross, 7th Block, Jayanagar, Bangalore 560 011	5-9-88

M. C. NARASIMHAN,
Secretary.

THE INSTITUTE OF COST AND WORKS ACCOUNTANTS OF INDIA

Calcutta, the 13th March 1989

No. 18-CWR (201)/89.—It is hereby notified in pursuance of Regulation 18 of the Cost and Works Accountants Regulations, 1959, that in exercise of the powers conferred by Regulation 17 of the said Regulations, the Council of the Institute of Cost and Works Accountants of India has restored to the Register of Members the name of Shri Pares Chandra Pal, BCOM, AICWA, P.O. Box 9643, Dar-Es-Salaam, Tanzania (Membership No. M/5845) with effect from 12-2-89.

No. 11-CWR (119)/89.—In pursuance of Sub-Regulation (3) of Regulation 11 of the Cost and Works Accountants Regulations, 1959, it is hereby notified that the Certificate of Practice granted to Shri N. G. Jog, BSC, AICWA, B-204, Pravat Chambers, 685 Budhwar Peth, Pune-411002, (Membership No. M/7784) is cancelled from 15th April 1988 to 30th June 1989 at his own request.

D. C. BHATTACHARYYA
Secretary

EMPLOYEES' STATE INSURANCE CORPORATION

New Delhi, the 31st March 1989

No. U-16/53/87-Med. II (Guj.).—In pursuance of the resolution passed by E.S.I. Corporation at its meeting held on 25-4-1981 conferring upon the Director General the powers of the Corporation under regulation 105 of the ESI (General) Regulation 1950 and such powers having been further delegated to me vide Director General's Order No. 1024 (G) dated 23-5-1983, I hereby authorise Dr. (Mrs.) A. J. Patel to function as Medical Authority at a monthly remuneration in accordance with the norms w.e.f. 2-5-1989 for one year, or till a full-time Medical Referee joins, whichever is earlier, for Ahmedabad Centre, for areas to be allocated by Regional Dy. Medical Commissioner (North-West Zone), Ahmedabad for the purpose of medical examination of the insured persons and grant of further certificates to them when the correctness of the original certificates is in doubt.

DR. K. M. SAXENA
Medical Commissioner

MINISTRY OF COMMUNICATIONS

DEPARTMENT OF POSTS

New Delhi-110 001, the 5th April 1989

NOTICE

No. 25-3/89-LI.—P.L.I. Policies particularised below having been lost from the Departmental custody, notice is hereby given that the payment thereof has been stopped. The Director, Postal Life Insurance, Calcutta has been authorised to issue duplicate policies in favour of the insureds. The public are hereby cautioned against dealing with the original policies :—

S. No. Policy No. and Date Name of Insurant Amount (Rs.)

1. 225790-PEA/50
dated 24-1-74
Shri A. L. Adatiya
4,000/-

The 6th April 1989

NOTICE

No. 25-6/89-LI.—P.L.I. Policies particularised below having been lost from the Departmental custody, notice is hereby given that the payment thereof has been stopped. The Director, Postal Life Insurance, Calcutta has been authorised to issue duplicate policies in favour of the insureds. The public are hereby cautioned against dealing with the original policies :—

S. No. Policy No. and Date Name of Insurant Amount (Rs.)

1. 267253-C dated 1-1-76
Sh. V. B. Jagtap
4,000/-
2. 363324-P dated 5-2-79
Shri V. B. Jagtap
3,000/-

JYOTSNA DIESH, Director (PLI)

INDUSTRIAL FINANCE CORPORATION OF INDIA

New Delhi-110 001, the 31st March 1989

No. 3/89.—In exercise of the powers conferred by Section 43(1) of the Industrial Finance Corporation Act, 1948, the Board of Directors of the Industrial Finance Corporation of India have, with the approval of the Industrial Development Bank of India, made the following amendments to Regulation Nos. 20(1) and 21 of IFCI General Regulations, 1982 :—

Regulation 20(1) In sub para (a) for the words "for the year ended 30th June" the words "for the year ended 31st March" shall be substituted.

Regulation 21 In this Regulation— for the words "after the 30th of June" the words "after the 31st of March" shall be substituted.

S. K. RISHI
Executive Director

New Delhi, the 7th April 1989

No. 4/89.—In exercise of the powers conferred by Section 43(1) of the Industrial Finance Corporation Act, 1948 (15 of 1948), the Board of Directors of the Industrial Finance Corporation of India have, with the approval of the Industrial Development Bank of India, made the following amendments to the Regulation Nos. 4, 9 and 13 of the Industrial Finance Corporation of India Employees' Provident Fund Regulations :—

REGULATION : 4

In this Regulation, for the figure and words "30th June" and "31st October" the figure and words "31st March" and "31st July", respectively shall be substituted.

REGULATION : 9

In this Regulation, for the figure and words "30th June" and "31st December" the figures and words "31st March" and "30th September", respectively shall be substituted.

REGULATION : 13

The existing Regulation shall be deleted and substituted by the following :—

"Interest on all sums standing in the books of the Fund to the credit of a subscriber shall cease to accrue on the expiry of a period of six months from :—

- (a) the day on which he leaves the service of the Corporation, or
- (b) if he leaves the service of the Corporation on the expiry of any period of leave, commencing from or after the date on which he would have retired from the service of the Corporation but for such leave, or dies during such period of leave, day on which such period of leave commences, or
- (c) if he dies before he leaves the service of the Corporation, otherwise than in the circumstances referred to in Clause (b) above, from the date of his death.

Provided that if, in any case, before the expiry of the said period of six months,

- (i) at the request of the subscriber or any other person to whom the sums are payable under regulation 16, the said sums are, or any portion thereof is, authorised to be disbursed, or
- (ii) in pursuance of an order of a Court or Tribunal, the said sums are, or any portion thereof is, paid to the order of such Court or Tribunal, interest shall cease to accrue on the said sums, or as the

case may be on such portion from the date on which the said sums are or any portion thereof is authorised to be disbursed, or as the case may be, paid to the order of such Court or Tribunal.

Provided further that even after the expiry of the period of six months referred to above, the Corporation, may, in its absolute discretion and without being under an obligation so to do, allow interest on sums standing in the books of the Fund to the credit of a subscriber, for a further period not exceeding one year, if the Corporation is satisfied that the non-payment of such sums to the subscriber or his nominee or nominees, or legal representatives, as the case may be, is not due to any default or lapse on the part of the subscriber, or his nominee or nominees or legal representatives, as the case may be".

2. The Industrial Finance Corporation of India Employees' Provident Fund Regulations as amended upto date are set out in the Appendix hereunder for information of all concerned.

H. C. SHARMA
General Manager

INDUSTRIAL FINANCE CORPORATION OF INDIA
[INCORPORATED UNDER THE INDUSTRIAL
FINANCE CORPORATION ACT, 1948 (XV OF 1948)]
INDUSTRIAL FINANCE CORPORATION OF INDIA
EMPLOYEES' PROVIDENT FUND REGULATIONS

(As Amended up to the 17th March, 1989)

In exercise of the power conferred by section 43 of the Industrial Finance Corporation Act, 1948 (XV of 1948), the Board after consultation with the Reserve Bank and with the previous sanction of the Central Government, hereby makes the following regulations, which shall be known as the Industrial Finance Corporation of India Employees' Provident Fund Regulations, 1948 :

1. Constitution

A Fund shall be created called "The Industrial Finance Corporation of India Employees' Provident Fund".

2. Administration

The Fund shall be held by the Corporation and shall be administered by a committee of Administrators consisting of the Chairman, three other Directors nominated by the Board, one Executive Director/General Manager and 3 persons one of whom shall represent the officers, the second the clerical and the third the staff in the subordinate service, all the four to be nominated by the Chairman. Without prejudice to the specific powers conferred on them under the various Regulations, the Administrators of the Fund shall be entitled to exercise all powers and to do all acts and things on behalf of the Fund under these Regulations.

3. Meetings of the Administrators

At every meeting of the Administrators, the Chairman or in his absence a Director authorised by him in writing in this behalf shall preside. The presence of at least three Administrators of whom one shall be the Chairman of the Director authorised by him in writing shall be necessary to form a quorum for the transaction of business. Each Administrator shall have one vote and in all cases of an equal division, the Chairman shall have a casting vote.

4. Statement of Accounts

The Accounts of the Fund shall be made up yearly as at the 31st March and an audited statement of the accounts as at that date will be submitted to a meeting of the Administrators by 31st July or such later date as may be permitted by the administrators in every year and a copy of such statement shall be made available to the subscribers at each office and branch as soon as may be possible after such meeting.

5. Membership for whom compulsory

- (i) Every permanent employee of the Corporation shall be bound to subscribe to the Fund.
- (ii) An employee appointed on probation to a post in which, if confirmed, he will become a permanent employee shall be deemed to be a permanent employee for the purpose of these Regulations from the date of his first appointment.
- (iii) (a) A temporary employee, other than an employee who is already subscribing to some other provident fund, may subscribe to the Fund, if so permitted by the Administrators.
- (b) Any other person in receipt of other than casual remuneration from the Corporation may also subscribe to the Fund, if so permitted by the Administrators :

Provided that where any sum is standing to the credit of such person in the Fund and has become payable to him by reason of the provisions of Regulation 14, such sum may in exceptional cases, if so permitted by the Administrators, continue to stand to his credit in the Fund for such time as he is in receipt of other than casual remuneration from the Corporation, and interest shall, notwithstanding anything contained in Regulation 13, accrue on such sum.

5A. Any employee required or permitted under Regulation 5 to subscribe to the Fund, if permitted by the Administrators to do so, pay to his credit in the Fund any amount granted to him by his former employer or employers by way, or in lieu of retirement benefits in respect of his service under such employer or employers;

Provided that the Corporation shall not be required to make any contribution in respect of any amount so paid into the Fund.

6. Rate of Subscription

The subscriber shall subscribe monthly to the Fund from the date on which he commences to subscribe, at the minimum rate of 10% of his pay.

Such subscription shall be deducted by the Corporation from the pay payable to the subscriber every month in amounts calculated to the nearest half rupee. The Corporation's contributions will remain fixed as provided by Regulation 8 below. The rate once fixed, including the rate of additional subscription, if any, shall remain unaltered throughout one year thereafter.

7. Subscription of subscriber on leave

(1) Every subscriber shall subscribe to the Fund when on duty or foreign service but not during a period of suspension.

Provided that a subscriber on re-instatement after a period passed under suspension shall be allowed the option of paying in one sum, or in instalments, any sum not exceeding the maximum amount of arrears of subscriptions permissible for that period.

(2) A subscriber may at his option, not subscribe during leave which either does not carry any leave salary or carries leave salary equal to or less than half pay or half average pay.

(3) The subscriber shall intimate his election not to subscribe during the leave referred to in sub-regulation (2) by written communication to the officer responsible for paying him, before he proceeds on leave. Failure to make due and timely intimation shall be deemed to constitute an election to subscribe. The option of a subscriber intimated under this sub-regulation shall be final.

8. Corporation's contribution

Same as otherwise provided in these Regulations. the Corporation shall contribute every month, a sum equal to

10% of the pay of the this subscriber, to his account in the Fund.

Provided that no such contribution shall be made by the Corporation in respect of subscribers who have been permitted to subscribe under sub-regulation (iii) of Regulation 5. Provided further that nothing in the foregoing proviso shall apply to a subscriber whose contract of employment provides specially for payment of contributions by the Corporation and the conditions governing such payment.

Provided also that in the case of a temporary employee subscribing under Sub-regulation (iii) of Regulation 5, who is subsequently taken into the permanent employment of the Corporation, the Corporation shall contribute, on the employee being made permanent, a sum equal to the amount subscribed by him during his temporary service.

Provided further that in respect of a subscriber who has been permitted to subscribe under clause (b) of sub-regulation (iii) of Regulation 5, the Corporation shall be liable to make contributions only if the conditions of service of such subscriber provide for the Corporation making such contribution.

Explanation : For purposes of this Regulation and Regulation 6, "pay" shall mean the amount drawn by an employee as :—

- (i) pay which has been sanctioned for a post held by him substantively or in officiating capacity, or which he is entitled by reasons of his position in a cadre;
- (ii) overseas pay, special pay and personal pay;
- (iii) any other emoluments which may be specially classed as pay by the Board.

9. Interest

The Corporation shall credit interest on the amount standing to each subscriber's credit at the end of every half-year at a rate which shall be fixed by the Corporation having regard to the return which can be obtained on the investment of other provident, charitable, religious and trust and quasi-trust funds in accordance with the rules, schemes or directions made, framed or given by the Central Governments in this behalf. Such interest shall be calculated to the nearest paise on the monthly products of each subscriber's account and shall be applied to the accounts half-yearly as on the 31st March and 30th September.

10. Annual statement of each subscriber's Account

Every subscriber shall receive from the Administrators of the Fund an annual statement showing the amount standing to his credit in the Fund.

11. Borrowing from the Fund

(1) At the discretion of the Corporation a temporary advance, not exceeding in any case the subscriber's own subscriptions and interest thereon, may be granted to a subscriber on application, from the amount standing to his credit in the Fund, subject to the following conditions :—

- (a) The Corporation is satisfied that the amount will be expended, on the following object or objects and not otherwise :—
 - (i) to pay expenses in connection with the illness, confinement or disability, including where necessary, the travelling expenses of the subscriber or any person actually dependant on him;
 - (ii) to meet the cost of higher education, including where necessary, the travelling expenses of the subscriber or any person actually dependant on him in the following cases, namely :—
 - (a) for education outside India for an academic technical, professional or vocational course beyond the High School stage; and

- (b) for any medical engineering, technical, professional or specialised vocational course after the successful completion of 10 years study in school conducted by any recognised institution and leading to a degree/diploma or certificate.

- (iii) to pay obligatory expenses on a scale appropriate to the status which by customary usage the subscriber has to incur in connection with marriages or other ceremonies of himself or of his children or of any other person actually dependant on him;

Provided that the condition of actual dependance shall not apply in the case of a son or daughter of the subscriber or in the case of an advance required to meet the funeral expenses of the parent of a subscriber.

- (iv) to meet the cost of legal proceedings instituted by the subscriber for vindicating his position in regard to any allegation made against him in respect of any act done or purporting to be done by him in the discharge of his official duty, the advance in this case being available in addition to any advance admissible for the same purpose from any other Corporation source :

Provided that the advance under this sub-clause shall not be admissible to a subscriber who institute legal proceedings in any court of law either in respect of any matter unconnected with his official duty or against the Corporation in respect of any condition of service or penalty imposed on him;

- (v) to meet the cost of his defence where the subscriber is prosecuted by the Corporation in any court of law;

- (vi) to meet any other expense or liability which, in the opinion of the Corporation, is unforeseen and extraordinary and beyond the ordinary means of the subscriber.

- (b) An advance shall not, except for special reasons to be recorded in writing by the Corporation; :

- (i) exceed three months' pay ('pay' as defined in Explanation to Regulation 8) or half the amount of the subscriber's own subscriptions to the Fund and interest thereon whichever is less, or

- (ii) be granted until the final repayment of the previous advance.

(2) (a) An advance shall be recovered from the subscriber in such number of equal monthly instalments as the Corporation may direct: but such number shall not be less than 12 unless the subscriber so elects or in any case more than 24 provided that in special cases where the amount of advance exceeds 3 months' pay of the subscriber as provided by clause (b) of sub-regulation (1), the Corporation may fix such number of instalments to be more than 24 but in no case more than 36. A subscriber may at his option repay more than one instalment in one month. Each instalment shall be a number of whole rupees, the amount of the advance being raised or reduced, if necessary, to admit of the fixation of such instalments.

(b) Recoveries shall commence when the subscriber draws his pay for the full month for the first time after the advance is made. Recovery shall not be made except with the subscriber's consent, while he is on leave other than ordinary leave on full average pay, or in receipt of subsistence grant.

(c) Recoveries made under this rule shall be credited as they are made to the subscriber's account in the Fund.

11A. (i) At the discretion of the Corporation and subject to such conditions and limitation as it may impose an advance may be granted to a subscriber on application, from the amount standing to his credit in the Fund for the purpose of purchasing shares in a Co-operative Housing Society or of making any deposit or payment of money by

way of earnest for otherwise, in each case solely with a view to securing a suitable house or premises for his residence or the residence of any person dependant on him.

(2) An advance under this Regulation shall be permitted only once during the service of the employee and shall not exceed the amount of the subscriber's subscription to the Fund and interest thereon, or the amount actually required for the purpose for which the advance has been applied for, whichever is less.

(3) An advance under this Regulation shall be recovered in such number of monthly instalments at such times and of such amount, as the Corporation may direct, the number of instalments not exceeding 120 in any case. A subscriber may at his option repay more than one instalment in one month and each instalment shall be a number of whole rupee.

12. Insurance Policies etc.

(i) Sums to meet :—

- (a) subscriptions to a family pension fund maintained by the Corporation for its employees; or

- (b) payments towards a policy of insurance on the life of the subscriber effected under a scheme of insurance maintained or approved by the Corporation;

may be withheld from subscriptions to the Fund or withdrawn from the amounts subscribed thereto by the subscriber (including interest thereon). Any sum so withheld from a subscription shall be deemed to be part of the subscription for the purpose of calculating the Corporation's contribution under Regulation 8.

(2) Where sums are withheld from subscriptions to the Fund or withdrawn from the amount subscribed thereto by the subscriber under sub-regulation (1) (b), the policy of insurance in respect of which such sums are withheld or withdrawn shall be transferred to the Corporation in consideration of the payment of premium on such policy and on such terms and conditions as the corporation may impose in respect of the amount, if any, recovered by the Corporation from the insurer.

13. Interest to cease on termination of service or death of subscriber

Regulation 13

The existing Regulation shall be deleted and substituted by the following :—

Interest on all sums standing in the books of the Fund to the Credit of a subscriber shall cease to accrue on the expiry of a period of six months from —

- (a) the day on which he leaves the service of the Corporation, or

- (b) if he leaves the service of the Corporation on the expiry of any period of leave, commencing from or after the date on which he would have retired from the service of the Corporation but for such leave, or dies during such period of leave, day on which such period of leave commences, or

- (c) if he dies before he leaves the service of the Corporation, otherwise than in the circumstances referred to in clause (b) above, from the date of his death;

Provided that if, in any case, before the expiry of the said period of six months.

- (i) at the request of the subscriber or any other person to whom the sums are payable under Regulation 16, the said sums are, or any portion thereof is, authorised to be disbursed, or

- (ii) in pursuance of an order of a Court or Tribunal, the said sums are, or any portion thereof is, paid to the order of such Court or Tribunal, interest shall cease to accrue on the said sums, or as the case may be, on such portion from the date on which the said sums are or any portion thereof is authorised to be disbursed, or as the case may be, paid to the order of such Court or Tribunal.

"Provided further that even after the expiry of the period of six months referred to above, the Corporation, may, in its absolute discretion and without being under an obligation so to do, allow interest on sums standing in the books of the Fund to the credit of a subscriber, for a further period not exceeding one year, if the Corporation is satisfied that the non-payment of such sums to the subscriber or his nominee or nominees, or legal representatives, as the case may be, is not due to any default or lapse on the part of the subscriber, or his nominee or nominees or legal representatives, as the case may be."

14. *Payment of amount standing to credit of subscriber*

(1) The sum standing to the credit of a subscriber shall become payable on the termination of his service or on his death :

Provided that a subscriber on leave preparatory to retirement may at his option withdraw from the sums standing to his credit in the Fund an amount not exceeding his own subscriptions and the interest thereon :

Provided also that a subscriber including any person permitted to subscribe to the Fund under sub clause (b) of clause (iii) of Regulation 5 may at any time after completion of 15 years service, if the withdrawal is for the purpose specified in sub-Regulation 2(b)(ii), (iii) & (iv) or after completion of 20 years of service if the withdrawal is for any other purposes or during 10 years immediately preceding the date of his retirement, or the date of expiry of his specified tenure of office as the case may be, be permitted by the Corporation at their discretion to withdraw, for the purposes and subject to the provisions contained in sub-Regulations (2), (3) & (4) from the standing to his credit in the Fund upto such amount as is specified in Regulation 14-A.

Provided further that and subject to the conditions that no deduction may be made which reduces the credit by more than the amount of any contribution by the Corporation with interest thereon, credited under Regulations 8 and 9, before the amount standing to the credit of the subscriber in the Fund is paid out of the Fund, the Board, in the case of Officers, and Chairman in the case of others may direct the deduction therefrom and payment to the corporation of—

- (a) any amount due under a liability incurred by the subscriber to the Corporation.
- (b) all amounts representing such contribution and interest, if the subscriber has been dismissed from service due to misconduct, insolvency or inefficiency or if the subscriber within five years of the commencement of his continuous services, including temporary service, resigns from the service or ceases to be an employee under the Corporation otherwise than by reasons of death, superannuation or a declaration by a competent medical authority that he is unfit for further service, or the abolition of the post or the reduction of establishment.

Note—(1)

In case of dismissal under (b) above, where the Board or Chairman, as the case may be, is satisfied that such deduction would cause exceptional hardship to the subscriber, the Board or Chairman may, by order, exempt from such deduction an amount not exceeding two-third of the amount of such contribution and interest which would have been payable to the subscriber, if he had retired on medical grounds. If any such order of his dismissal is subsequently cancelled, the amount so deducted shall, on his reinstatement in the service be replaced to his credit in the Fund.

Note—(2)

Resignation from service in order to take up appointment under the Central Government or under a State Government or under a body corporate owned or controlled by Government or an autonomous organisation, registered under the Societies Registration Act, 1860 (21 of 1860) without any break and with proper permission of the Corporation, shall not be treated as resignation from Corporation's service.

- (2) (a) Subject to such terms and conditions as may be imposed by the Corporation, a withdrawal under the second proviso to sub-regulation (1) may be permitted for—

(i) meeting the cost of higher education, including where necessary, the travelling expenses, of any child of the subscriber actually dependant on him in the following cases, namely—

(1) for education outside India for academic, technical, professional or vocational course, beyond the High School stage; and

(2) For any medical, engineering, technical professional or specialised, vocational course after the successful completion of 10 years study in school conducted by any recognised institution and leading to a degree/diploma or certificate.

(ii) meeting the expenditure in connection with the marriage of the subscriber's son or daughter and if he has no daughter, of any other female relation dependant on him;

(iii) meeting the expenses in connection with the illness, including where necessary, the travelling expenses, of the subscriber or any person actually dependant on him;

Provided that a subscriber may, at his option, return to the Fund in lump sum the whole or any part of the sum so withdrawn by him.

- (b) Subject to the provisions of clause (c) to (j), withdrawals under the second proviso to sub-Regulation (1) may also be permitted for the following purposes namely :—

(i) Purchase of a house or a site for a house;

(ii) Building a house on a plot of land belonging to the subscriber or the subscriber's spouse or both of them jointly as the case may be provided such spouse is a nominee under these Regulations and such nomination, subsists on the date of application for withdrawal.

(iii) Repayment of a loan taken for such purchase or building (including such a loan secured on the house or site purchased or house built).

(iv) Re-constructing or making additions or alterations to a house already owned or acquired by the subscriber or an ancestral house in which the subscriber has an interest under the personal law applicable to the subscriber.

(v) Payment of stamp duty and registration charges in connection with acquisition of a house or a site provided that withdrawals shall not be granted for acquisition of more than one house or site except in a case, covered by sub-Regulation (4) (d) of Regulation 14.

(c) The house purchased or built should be for the subscriber himself and in the case of a site, it should be for building a house for the subscriber himself; the house or site shall be at the station where the subscriber is working or at the place, to be declared by him in writing, as the place where he intends to reside after retirement.

- (d) The amount permitted to be withdrawn shall not exceed the amount required for the purpose for which withdrawal is permitted; any excess of the amount actually required shall forthwith be refunded.
- (e) The subscriber may at any time be required to satisfy the Corporation in such manner as it may specify, of any one of the following matters, namely—
- that the amount sought to be withdrawn or permitted to be withdrawn is actually required for the purpose for which withdrawal is sought or has been permitted and that it has been applied to such purpose;
 - that the amount sought to be withdrawn or permitted to be withdrawn, together with other funds, if any, available to the subscriber, is sufficient for the purpose for which withdrawal is sought or has been permitted;
 - That the subscriber has obtained or will obtain a good title to the site or the house, or where the construction is to be put up on a site belonging to the subscriber's spouse or both of them jointly has/have obtained or will obtain a good title to the site or the house and
 - that the subscriber has obtained or will obtain all the permissions and approvals necessary for building the house;

and the subscriber shall comply with such requirements

- Where the withdrawal is for building a house, such building shall commence before the expiry of six months or such longer period, as the Corporation may allow, and be completed before the expiry of eighteen months, or such longer period as the Corporation may allow, from the date of the subscriber receiving the amount withdrawn or any part thereof.
- Where the withdrawal is for repayment of a loan, such repayment should be made with three months from the date of the subscriber receiving the amount withdrawn or any part thereof.
- Where the withdrawal is for the purpose of building a house, the amount permitted to be withdrawn may be paid out in such number of instalments and at such time or times as the Corporation may determine, having regard to the progress made in the building.
- The subscriber shall not without the previous written permission of the Corporation, transfer, mortgage or otherwise alienate the site or house, in default, the subscriber shall be liable to refund in one instalment the entire amount withdrawn.
- A subscriber may, at his option, return to the Fund the whole or any part of the sum withdrawn by him.

(3) For the purpose of sub regulation (2) the expression 'Purchase of a house' shall include the acquisition, as a member of a Co-operative Housing Society, whether by purchase of a shares in or depositing sums with such society, of residential accommodation allotted by the Society and the purchase of a residential house or premises on hire purchase basis or otherwise from a Housing Board, City Improvement Trust, or other like authority formed or established under any law for the time being in force and clauses (c), (d), (e) (i), (e) (ii), (i) and (j) of Sub-regulation (2) shall so far as may apply accordingly to advances for such acquisition or purchase.

(4) Where a withdrawal has been permitted under sub-regulation (2), read with sub-regulation (3), the following conditions shall also apply.

- The subscriber may be required to satisfy the Corporation that he has obtained title to the shares in

the Co-operative Housing Society concerned or has obtained the documents evidencing the deposit of sums with such Society or that he has obtained the documents evidencing the right to the residential house or premises purchased on hire purchase basis or otherwise from a Housing Board, City Improvement Trust or other like authority formed or established under any law for the time being in force.

- The residential accommodation is obtained by the member before the expiry of six months, or such longer period as the Corporation may allow, from the date of the subscriber receiving the amount withdrawn or any part thereof.
- The amount may be permitted to be withdrawn in such number of instalments, not exceeding four, and at such time or times as the Corporation may determine.
- In the event of a subscriber transferring, assigning or creating any interest whatsoever, in the house acquired by him with the help of a withdrawal under these Regulations the subscriber shall refund to the Corporation, the entire amount withdrawn by him forthwith on such transfer, assignment or creation of interest, as the case may be.

Provided where such transfer, assignment or creation of interest is with the permission of the Corporation and the subscriber has refunded the Corporation the amount withdrawn by him, he shall be eligible for a fresh withdrawal from the Fund, subject to the other provisions of these Regulations.

14-A. Limits and conditions as to withdrawal

Any sum withdrawn by a subscriber at any one time for one or more of the purpose specified in clause (a) of sub-regulation (2) of Regulation 14 or sub-clause (iv) of clause (b) of that sub-regulation from the amount standing to his credit in the Fund shall not ordinarily exceed one-half of his own subscriptions and the interest thereon or six months' pay (pay as defined in Explanation to Regulation 8), whichever is less. The sanctioning authority may, however, sanction the withdrawal of an amount in excess of this limit upto 3/4ths of his own subscriptions and the interest thereon in the Fund having due regard to (i) the object for which the withdrawal is being made, (ii) the status of the subscriber, and (iii) the amount of his own subscriptions and the interest thereon in the Fund.

(2) Any sum withdrawn by a subscriber under clause (b) of sub-Regulation (2) of Regulation 14 (except sub-clause iv of that clause) shall not exceed his own subscriptions and the interest thereon.

"PROVIDED that in a case where both husband and wife are employees of the Corporation subscribing to the fund and are each others' nominees, the aggregate of the advance and withdrawal that can be availed of by both of them for the purpose of acquiring one house in the name of either shall not exceed such amount that may be specified by the Corporation from time to time as available to a single subscriber."

(3) A subscriber who has been permitted to withdraw money from the Fund under sub-regulation (2) of Regulation 14 shall satisfy the Corporation within a reasonable period as may be specified by the Corporation that the money has been utilised for the purpose for which it was withdrawn, and if he fails to do so, the whole of the sum so withdrawn or so much thereof as has not been applied for the purpose for which it was withdrawn shall forthwith be repaid in one lump sum, together with interest thereon at the rate determined under Regulation 9, by the subscriber to the Fund, and in default of such payment it shall be ordered by the Corporation to be recovered from his emoluments either in a lump sum or in such number of monthly instalments, as may be determined by the Corporation.

14-B. Conversion of advance into withdrawal

A subscriber who has been granted an advance under Regulation 11 or Regulation 11-A for any of the purposes specified therein, may be permitted by the Corporation to convert the balance outstanding against such advance into a withdrawal under Regulation 14 on his satisfying the relative conditions laid down in that Regulation.

14-C. Sanctioning authority and delegation of powers—

(1) The administrators may, subject to such conditions as they may think fit to impose, delegate to any officer of the Corporation as they may specify in this behalf all or any of the powers conferred upon them by these Regulations with the exception of the powers conferred by Regulation 4 and the proviso to Regulation 5(iii) (b) and Regulation 5—A.

(2) Without prejudice to the provisions of sub-regulation (1) :—

- (a) an advance under Regulation 11 or advance under Regulation 11-A, upto six months' pay of the subscriber or one half of the subscriber's own subscriptions and interest thereon, whichever is higher, may be sanctioned by the Manager (Admn.)/Manager/Deputy General Manager/Assistant General Manager/Chief Accountant.
- (b) Withdrawals under the first proviso to sub-regulation (1) of Regulation 14 may be sanctioned by the General Manager/Deputy General Manager/Assistant General Manager/Chief Accountant in the case of officers and the Manager (Admn.)/Manager (Estt. & Accounts) in all other cases.
- (c) Withdrawal under the second proviso to sub-regulation (1) of Regulation 14 upto six months' pay of the subscriber or one half of the subscriber's own subscriptions and interest thereon, whichever is higher, may be sanctioned by the Manager (Admn.) Manager (Estt. & Accounts) in all cases and withdrawals above these limits under the Regulation may be sanctioned by the General Manager/Deputy General Manager/Assistant General Manager/Chief Accountant.

Note :

For the purpose of this Regulation

(a) General Manager includes a Deputy General Manager and a Manager.

15. Nominations

(1) Every subscriber shall, as soon as may be after joining the Fund, send to the Head Office of the corporation a nomination conferring on one or more persons the right to receive the amount that may stand to his credit in the Fund, in the event of his death before that amount has become payable, or having become payable, has not been paid.

Provided that if, at the time of making the nomination the subscriber has a family, the nomination shall not be in favour of any person or persons other than the members of his family :

Provided further that the nomination made by the subscriber in respect of any other Provident Fund to which he was subscribing before joining the Fund, shall, if the amount to his credit in such other Fund has been transferred to his credit in this fund, be deemed to be a nomination duly made under this Regulation until he makes a nomination in accordance with this Regulation.

(2) If a subscriber nominates more than one person under sub-regulation (1), he shall specify in the nomination the amount of share payable to each of the nominees in such manner as to cover the whole of the amount that may stand to his credit in the Fund at any time.

(3) Every nomination shall be made in such one of the Forms annexed to these Regulations as is appropriate in the circumstances.

(4) A subscriber may at any time cancel nomination by sending a notice in writing to the Head Office of the Corporation.

Provided that the subscriber shall along with such notice send a fresh nomination made in accordance with the provisions of this Regulation.

(5) A subscriber may provide in a nomination :—

- (a) in respect of any specified nominee that in the event of his predeceasing the subscriber, the right conferred upon that nominee shall pass to such other person or persons as may be specified in the nomination provided that such other person or persons shall, if the subscriber has other members of his family, be such other member or members Where the subscribers confers such a right on more than one person under this clause, he shall specify the amount or share payable to each of such persons in such a manner as to cover the whole of the amount payable to the nominee :
- (b) that the nomination shall become invalid in the event of the happening of a contingency specified therein :

Provided that if at the time of making the nomination the subscriber has no family, he shall provide in the nomination that it shall become invalid in the event of his subsequently acquiring a family :

Provided further that if at the time of making the nomination the subscriber has only one member of the family, he shall provide in the nomination that the right conferred upon the alternate nominee under Clause (a) shall become invalid in the event of his subsequently acquiring other member or members in his family.

(6) Immediately on the death of a nominee in respect of whom no special provision has been made in the nomination under clause (a) of sub-regulation (5) or on the occurrence of any event by reason of which the nomination becomes invalid in pursuance of clause (b) of sub-regulation (6) or the proviso thereto, the subscriber shall send to the Head Office of the Corporation a notice in writing cancelling the nomination together with a fresh nomination made in accordance with the provisions of this Regulation.

(7) Every nomination made and every notice of cancellation given by a subscriber shall to the extent that it is valid, take effect, on the date on which it is received by the Head Office of the Corporation.

Explanation—1

In this Regulation and in Regulation 10, "Family" means the wife or wives, or husband, and children of a subscriber, and the widow or widows and children of a deceased son of a subscriber :

Provided that if subscriber proves that wife has been judicially separated from him or has ceased under the customary law of the community to which she belongs to be entitled to maintenance she shall no longer be deemed to be a member of the family unless the subscriber subsequently indicates by express notification in writing to the Administrators that she shall continue to be so regarded.

Provided further that if a subscriber by notification in writing to the Administrators expresses her desire to exclude her husband from the family, the husband shall no longer be deemed to be a member of the family unless the subscriber subsequently cancels formally in writing her notification excluding him :

Provided further that in cases where adoption is recognised by the personal law governing the subscriber, an adopted child shall be considered as a child.

Explanation—II

For the purpose of this Regulation "person" includes the Central Government, a State Government, a local authority, a company or association or body of individuals, whether incorporated or not, or any person designated by virtue of office.

15-A. Nomination of dependants in certain cases

Notwithstanding anything contained in Regulation 15, a subscriber may nominate any person, who is a dependant as defined in the Provident Funds Act, 1925, if the Corporation is satisfied that the making or subsistence of a nomination in accordance with that Regulation would cause

undue hardship or would not be just and equitable. Such nomination shall be made in the Form, (I.F.C.P.F. 7) annexed to these Regulations.

16. Payment on death of a subscriber—

On the death of a subscriber :—

(i) When the subscriber leaves a family—

(a) If a nomination made by the subscriber in accordance with these Regulations in favour of a member or members of his family subsists, the amount standing to his credit in the Fund or the part thereof to which the nomination relates, shall become payable to the nominee or nominees in the proportion specified in the nomination.

(b) If no such nomination in favour of a member or the family of the subscriber subsists or if such nomination relates only to a part of the amount standing to his credit in the Fund, the whole amount or the part thereof to which the nomination does not relate, as the case may be, shall not withstanding any nomination purporting to be in favour of any person or persons other than a member or members of his family, become payable to the members of his family in equal shares :

Provided that no share shall be payable to—

- (i) sons who have attained legal majority;
- (ii) sons of a deceased son who have attained legal majority;
- (iii) married daughters whose husbands are alive;
- (iv) married daughters of a deceased son whose husbands are alive;

If there is any member of the family other than those specified in clauses (i), (ii), (iii) and (iv) :

Provided further that the widow or widows and the child or children of a deceased son shall receive between them in equal parts only the share which that son would have received if he had survived the subscriber and if, in a case where had he survived the subscriber, he would have been excluded from a share under Clause (i) of the first proviso, he had not been so excluded :

Provided further that if a nomination under Regulation 15-A in favour of a dependant or dependants subsists, the amount standing to the credit of the subscriber or the part thereof to which the nomination relates shall, notwithstanding anything contained in this sub-clause become payable to the nominee or nominees in the proportion specified in the nomination.

(ii) When the subscriber leaves no family :—

(a) If a nomination made by the subscriber in accordance with these Regulations, in favour of any person or persons, who is or are dependant or dependants of the subscriber, as defined in Clause (c) of section 2 of the Provident Funds Act 1925, subsists, the amount standing to his credit in the Fund or, as the case may be, the part thereof to which the nomination relates, shall become payable to his nominee or nominees in the proportion specified in the nomination.

(b) If any such nomination subsists in favour of any person who is not a dependant as defined in Clause (c) of Section 2 of the Provident Funds Act, 1925, the amount standing to his credit in the Fund, or as the case may be, the part thereof to which the nomination relates, shall become payable to such nominee if the amount does not exceed five thousand rupees.

(c) If no such nomination subsists or if such nomination relates only to a part of the amount standing to the credit of the subscriber in the Fund the whole or, as the case may be, the part thereof to which the nomination does not relate, shall become payable to any person appearing to the Administrators to be otherwise entitled to receive it, if

the whole sum, or as the case may be, the part thereof does not exceed five thousand rupees.

(d) Any sum or any part thereof which is not payable to any person under sub-clause (a) or sub-clause (b) or sub-clause (c), shall become payable to any person on production of probate, or letters of administration evidencing the grant to him of administration to the estate of the deceased or a succession certificate in accordance with Clause (c) of Section 4 of the Provident Funds Act, 1925.

NOTE :

When a nominee or other persons is a dependant of the subscriber as defined in Clause (c) of Section 2 of the Provident Funds Act, 1925, the amount payable to such nominee or other person under these Regulations vests in the dependant under sub-section (2) of Section 3 of the said Act.

17. Agreement to be executed by subscribers—

Every employee on becoming a subscriber to the Fund shall execute an agreement in the following form :—

I hereby declare that I have read and understood the Regulations of the Industrial Finance Corporation of India Employees' Provident Fund and I hereby undertake to subscribe to the said Fund and I hereby agree to be bound by the said Regulations.

Signature in full

Date

Address

Witness

I.F.C.P.F.—1

FORM OF AGREEMENT

Place

Date

To

The Administrators of the
Industrial Finance Corporation of India
Employees' Provident Fund.

GENTLEMEN,

I hereby declare that I have read and understood the Regulations of the Industrial Finance Corporation of India Employees' Provident Fund and I hereby subscribe and agree to be bound by the said Regulations.

Name [in full]

Date of birth

Nature of appointment

Salary per month

I am,

Your Obedient servant,

[Signature]

Index No.

Witness :

Signature :

Designation :

Address :

I.F.C.P.F.—2

FORM OF NOMINATION

I. [When the subscriber has a family and wishes to nominate one member thereof]

To

The Administrators of the
Industrial Finance Corporation of India
Employees' Provident Fund.

GENTLEMEN,

I hereby nominate the person mentioned below, who is a member of my family as defined in Regulation No. 15 of the Industrial Finance Corporation of India Employees' Provident Fund Regulations, to receive the amount that may stand to my credit in the Fund, in the event of my death before that amount has become payable or having become payable has not been paid :

Name & Address of nominee	Relationship with subscriber	Age	Contingencies on the happening of which the nomination shall become invalid	Name, address and relationship of the person, if any, to whom the right of the nominee shall pass in the event of his pre-deceasing the subscriber
---------------------------	------------------------------	-----	---	--

Dated this _____ day of _____ 19____ at _____.

Two witnesses to signature

1. Name : _____

Address : _____

2. Name : _____

Address : _____

Signature of subscriber.

Subscriber's signature verified by me.

MANAGER

I.F.C.P.F.—3.

FORM OF NOMINATION

II. (When the subscriber has a family and wishes to nominate more than one member thereof.)

To

The Administrators of the
Industrial Finance Corporation of India
Employees' Provident Fund.

GENTLEMEN,

I hereby nominate the persons mentioned below, who are members of my family as defined in Regulation No. 15 of the Industrial Finance Corporation of India Employees' Provident Fund Regulations, to receive the amount that may stand to my credit in the Fund, in the event of my death before that amount has become payable, or having become payable has not been paid and direct that the said amount shall be distributed among the said persons in the manner shown below against their names :—

Name and Address of nominee	Relationship with subscriber	Age	*Amount or share of accumulations to be paid to each	Contingencies on the happening of which the nomination shall become invalid	Name, address and relationship of the person, if any, to whom the right of the nominee shall pass in the event of his pre-deceasing the subscriber
-----------------------------	------------------------------	-----	--	---	--

Dated this _____ day of _____ 19____ at _____.

Two witnesses to signature

1. Name : _____

Address : _____

2. Name : _____

Address : _____

Signature of subscriber.

Subscriber's signature verified by me.

MANAGER

* Note :—This column should be filled in so as to cover the whole amount that may stand to the credit of the subscriber in the Fund at any time.

I.F.C.P.F.—4

FORM OF NOMINATION

III. (When the subscriber has no family and wishes to nominate one person)

To

The Administrators of the
Industrial Finance Corporation of India
Employees' Provident Fund.

GENTLEMEN,

I, having no family as defined in Regulation No. 15 of the Industrial Finance Corporation of India Employees' Provident Fund Regulations hereby nominate the person mentioned below to receive the amount that may stand to my credit in the Fund, in the event of my death before that amount has become payable, or having become payable has not been paid :—

Name and Address of nominee	Relationship with nominee	Age	*Contingencies on the happening of which the nomination shall become invalid	Name, address and relationship of the person, if any, to whom the right of the nominee shall pass in the event of his pre-deceasing the subscriber
-----------------------------	---------------------------	-----	--	--

Dated this _____ day of _____ 19 _____ at _____

Two witnesses to signature

Signature of subscriber.

1. Name : _____

Subscriber's signature verified by me.

Address : _____

2. Name : _____

Address : _____

MANAGER

*Note :—Where a subscriber who has no family makes a nomination, he shall specify in this column that the nomination shall become invalid in the event of his subsequently acquiring a family.

I.F.C.P.F.—5

FORM OF NOMINATION

IV. (When the subscriber has no family and wishes to nominate more than one person)

To

The Administrators of the
Industrial Finance Corporation of India
Employees' Provident Fund.

GENTLEMEN,

I, having no family as defined in Regulation No. 15 of the Industrial Finance Corporation of India Employees' Provident Fund Regulations hereby nominate the persons mentioned below to receive the amount that may stand to my credit in the Fund, in the event of my death before that amount has become payable, or having become payable has not been paid and direct that the said amount shall be distributed among the said persons in the manner shown below against their Names :—

Name and Address of nominees	Relationship with subscriber	Age	*Amount of share of accumulations to be paid to each	**Contingencies on the happening of which the nomination shall become invalid	Name, address and relationship of the person, if any, to whom the right of the nominee shall pass in the event of his pre-deceasing the subscriber
------------------------------	------------------------------	-----	--	---	--

Dated this _____ day of _____ 19 _____ at _____

Two witnesses to signature

Signature of subscriber.

1. Name : _____

Subscriber's signature verified by me.

Address : _____

2. Name : _____

Address : _____

MANAGER

*Note :—This column should be filled in so as to cover the whole amount that may stand to the credit of the subscriber in the Fund at any time;

**Note :—Where a subscriber who has no family makes a nomination, he shall specify in this column that the nomination shall become invalid in the event of his subsequently acquiring a family.

I.F.C.P.F.—6

(FORM FOR FIXING RATE OF SUBSCRIPTION)

Place _____

Date _____

To

The Manager,
Industrial Finance Corporation of India

Sir,

I hereby direct under Regulation 6 of the Industrial Finance Corporation of India Employees' Provident Fund Regulations that _____ per cent of my pay may be every month as my subscription to the Provident Fund.

I am,
Your obedient servant,

Signature _____

Designation _____

Index No. _____

I.F.C.P.F.—7

FORM OF NOMINATION

V. (When the subscriber has a family but wishes to nominate a dependant in terms of Regulation 15-A)

To

The Administrators of the
Industrial Finance Corporation of India
Employees' Provident Fund.

GENTLEMEN,

In terms of Regulation 15-A of the Industrial Finance Corporation of India Employees' Provident Fund Regulations, I hereby nominate the dependants mentioned below to receive the amount that may stand to my credit in the Fund. in the event of my death before that amount has become payable, or having become payable has not been paid, and direct that the said amount shall be distributed among the said persons in the manner shown below against their names :—

Name and address of nominee or nominees	Relationship with the subscriber	Age of the nominee or nominees	*Amount of share of accumulations to be paid to each	Reasons for nominating dependent when the subscriber has a family	Name, address and relationship of the person, if any, to whom the right of the nominee shall pass in the event of his pre-deceasing the subscriber
---	----------------------------------	--------------------------------	--	---	--

Dated this _____ day of _____ 19 _____ at _____

Two witnesses to signature

Signature of subscriber.

1. Name : _____

Address : _____

Subscriber's signature verified by me.

2. Name : _____

Address : _____

MANAGER

*Note :—The column should be filled in so as to cover the whole amount that may stand to the credit of the subscriber in the Fund at any time.